जैन-वाल-वोधक इसरा भाग

प्रत्यात्वात् क्षेत्र इ. इत्याच्या स्वयंत्रीयाः

禁

विषय-सूची

| पाठ-संख्या | विषय | वृष्ठ | पाठ-संख | या | विषय | বূয় |
|------------------------------|------------------|-------------------|--------------|--------|-------------------|------|
| श्री मंगलाच | रण | १ | २४ क्पन | वन्द । | (कहानी) | કર |
| १ सम्याद्शी | न | ર | | | वि-रक्षा) | 83 |
| २ अविनयी | वालक | 3 | | | ोटाणुओंसे बचो | 88 |
| ३ देव-स्तुति | । (युधजन) | ex | २७ नीति | | | 84 |
| | ॥-आरती-चिनय | Ę | | | जन (कद्दानी) | 84 |
| | त (दोलतराम) | 9 | | | ोरं बैल (,,) | 88 |
| ६ उदारता | | 201 | | | व्यके भेद | ક્ષ |
| 🤉 जिनवाण | ी-म्तुति (सार्थ) | १२ | op a special | | ता चदला : | |
| ८ नीरोगत | । (स्वास्थ्य) | ડંક | प्रत्य | पुका | ार | 43 |
| ६ श्रायकके | वारह वत | 24 | ३२ दस | | | 44 |
| १० लकपृहा | रा (कहानी) | १७ | ३३ नी | तेके र | दोहे | 44 |
| | ते (भृथरदास) | 3,6 | ३४ परि | श्रम | | 4,9 |
| ॅरे २ झीय ऑ | र अजीव | ۱ ه. | ३५ आर | द्र का | † | 46 |
| | और धनसुख | 2,3 | ३५ सम | य-ि | ा गाजन | 45 |
| १४ अहिमा- | - | 200 | | | न (कहानी) | ÉĘ |
| | ाबगा (भृथरदास) |) 2 ,5 | | | ने-प्रशंगा (दोहै) | |
| १६ सत्यवा | | 5,5 | हेर सार | | | 5,6 |
| १७ सन्य अ | | 35 | | | :-पाट (मंगळ) | 90 |
| | श चोर (कहाती) | 23 | | | वि पुत्र (कहानी | 34 |
| १२ सन्यकी | | 38 | | | या और क्यों? | 4 |
| ३० अध्यान | | 33 | | | भी पहलाल | |
| | र पार (गरानी) | 34 | া সা | r Per | र प्राप्त | 60 |
| ०० कि सम्बद्धि १० सम्बद्ध | | 34 | ५५ । य | प्रभा | ी 'लास' जीप | 64 |
| 4 4 4 T | के अस्त्रावर्षा | , | 19th 187 | U4 : | ीर प्रसाद | 49 |
| | | | | | | |

到 四种种种。



जन-बाह-बादक रामा भाग

Tiphing re-

PARTY DE TON MINE !

AND THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE PAR

पहला पाठ

सम्यग्दर्शन

शिष्य-गुरुजी, सन्यग्दर्शनका क्या स्वरूप है ?

गुरु—सच्चे देव, सच्चे गुरु और सच्चे शास्त्रके श्रद्धान अर्थात् श्रद्धापूर्वक विश्वास करनेको सम्यग्दरान कहते हैं।

शिष्य परन्तु गुरुजी, उस दिन शास्त्र-सभामें तो पंडितजीने महा था कि जीव, अजीव, आस्त्रव, वंध्र, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्त्वोंका श्रद्धान करना सम्यादर्शन है। तो गुरुजी, सम्यादर्शन क्या दो प्रकारका होता है?

गुरु-- तुम उस समय पंडितजीसे पूछते, तो ये यता देते। लेर, अब समक्ष लो। याम्तवर्मे सत्यार्थ देव, गुरु और शास्त्रका श्रद्धान करना, और सात तन्त्रोंका श्रद्धान करना, एक ही बात है; क्योंकि देव, गुरु और शास्त्रके उपदेशमें ही सात तन्त्रोंका स्वरूप मालूग होता है। इसलिए एकका श्रद्धान कर्त्तरे दुसरेका श्रद्धान अपने-आप हो जाता है।

शिष्य - गुरुजी, देव, गुरु और शास्त्रका श्रदास करते। सान तन्त्रोंका श्रदान कीने अपने आप हो जायगा? और जी सान तन्त्रोंका श्रदान करेगा, उसकी देव-गृह-शाहबकी श्रदा कीने अपने अस्त हो जायगी?

गुरु अच्छा सुनो, शार्त्वोमें हो साल सन्द यसाये सुवे ही। इस्टिए जो शार्त्वमें अक्षान करेगा, उसे सात सम्बीका झान हो। नायसा । इसा प्रकार जो सात सम्बोधा स्वाप्त समक्रकर

पंडितजीके पडोसमें एक वैश्यका घर था। उसके घर अचानक ही एक दिन छप्पर गिर पड़ा। वह दौड़कर पंडितजीके घर गया, और उनसे कहने लगा—'मेरा छप्पर गिर गया है, आपके यहाँ कोई लकड़ीका खम्भा हो, तो रुपाकर दे दोजिये।' पंडितजीने अपने विद्यार्थियोंमें से रतनलालको उँगलोसे बताकर कहा—'तुम इस लड़केको ले जाओ। यह लड़का विनय-रहित लकड़के समान जड़ है, इसीको खम्मेकी जगह खड़ा करके इसके माथेपर छप्पर रख दो।' तब रतनलाल घयड़ाकर उस वैश्यसे बोला—'नहीं-नहीं, मुक्ते माफ करी। मुफसे छप्परका बोभ नहीं उठाया जायगा।' पंडितजीने कहा—'तुके अवश्य हो खम्मा यननेके छिए जाना पड़ेगा, क्योंकि त् विनय-रहित खम्मा सरीखा है।' रतनळाळने हाथ जोड़कर कहा-भूके हरगिज न भेजिये, में आजसे विनयी यनूंगा। आप मुके बताइये कि विनय किसे कहते हैं और किन-किनफी वितय करनी चाहिए?' तब पंडितजीने कहा-देव, गुरु (साच्), शास्त्र और मन्दिर ये सब पुतनीय हैं। इनको देखने ही हाथको जीड् मस्त्रक नमाकर नमस्कार (प्रणाम) मरना वादिए। इसी प्रकार गुण, बृद्धि, उमर और सम्बन्ध शादिमें अञ्चलक, पंडित, माता, विता, चाचा, मामा, यह भाई भादि जो अपनेने बड़े हैं, इन सबको भी हाथ जोड़कर प्रणास करना चाहिए । इनकी जैपी आजा हो, थेगा ही काम करना चाहिए । बतको पीट देश थेटना, बरका भारतना भारत स्वास, सहसा न मालना - यन सब अविवय है। अनगर आपने हासित सेमा

我 我我们 我这样,我们还是我们 医水杨醇 我我们 我们的 人名英格兰 門籍 如于中央的 在京本 医含素 自然处理的 医性神经 经处理 经免费 医红斑 for which from the proper form to 人名西班 经人名英格兰 有在 有之 有其由為人 医神经性病者 有着 不起一般的形象 可以不成为此人 新江 在中的 在中的 有一种的 有一种的 不知识的 學問題 医神经 经保险费 医食 医皮肤 医皮肤 医皮肤 white for the tast of the

नीत्या पाढ

THE PERSON AND PARTY OF THE PE to five our faces states, as the state of a the second secon The state of the second er for all the first to the the the Kinds and give recommendate and the second to the the state of the state of the state of the state of the street and the street of the

जय वीतराग-विज्ञान पूर, जय मोह-तिमिरको हरन-मूर; जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, हग-सुख वीरज-मंडित अपार। जय परमशान्त-मुद्रा-समेत, भविजनको निज अनुभृति-हेत; भिव भागन-वश जोगे-वसाय, तुम धुनि ह्व[ै] सुनि विश्रम नशा^{य ।} तुम गुण चिन्तत निज-पर-विवेक, व्रगटें, विघटें आपद अनेक ह तुम जग-भृषण द्षण-वियुक्त, सव महिमा-युक्त विकल्प-मुक्त। अविरुद्ध शुद्ध चेतन-स्वरूप, परमात्म परम-पावन अनुपः शुभ-अञ्चभ-विभाव-अभाव कीन, स्वाभाविक परिणतिमय अछीन अटाइश-दोप-विष्रुक्त धीर, सुचतुष्टय-मय राजत गंभीर ; मुनि गणधरादि सेवत महन्त, नव-केवल-लव्धि रमाधरन्त। तुम शामन सेय अमेय जीव, शिव गये, जाहिं, जे हैं सदीव ; भव-मागरमें दृष्य-छार-वारि, तारनको और न आप टारि। यह लिख निज-देख-गद हरन-काज, तुम ही निमिल-कारण इलाज जाने, नार्ने में अग्ग आय. उत्तरी निज दुख जो निर सहाय। में अम्यो अपनयो सियरि आप, अपनाये तिथि-फल पूर्ण-पाप ; निजरी परकी करता विद्यान, परमें अनिस्तता इन्द्र हान। अपूर्वित सर्वेः अवान प्राप्ति, प्रयो स्थ स्राप्तमा जानि वारि ; त्य गोगानिमें अगोर नित्ता, काई न अनुसरी स्टार्ट्सार।

Acres with THE CAR STATE OF STAT The state of the s As a second with the second se A STATE OF THE STA THE REST WAS THE REST OF THE PARTY OF THE PA The statement of the first the statement of the statement the state of the s The state of the s the state of the s ALLE BURNESS OF THE REAL PROPERTY OF THE PERSON OF THE PER And the same of th The second secon The second secon

छठा पाठ

उदारता

हरएक वालकको अपने चित्तमें ओछापन और कृपणता (कंजूसी) न रखकर हमेशा उदारता (चित्तको वड़ा) रखना चाहिए; क्योंकि उदारताके समान दूसरा कोई उत्तम गुण नहीं है। इस दुनियामें जितने भी उदार पुरुष हो गये हैं, उन सबका यश (कीर्ति) अभी तक गाया जाता है।

जयपुरमें मानमल नामक एक सद्युद्दस्य था। उसके प्यारेलाल नामका थाठ वर्षका एक सुशील लड़का था। प्यारेलाल अत्यन्त उदार-प्रकृतिका था। अपने उदार-भायके कारण उसे अपने महाविद्यालयकी तरफसे बहुत सम्माग और पुरस्कार मिला था। बन्यनसे हो उसमें उत्तम-उत्तम गुण मीनूद थे, परन्तु उदारता गुण स्वसे अधिक था। किसीका भला होता हो, तो उस काममें यह हमेशा आगे होकर सहायता करता था। इतता हो नहीं, किस्तु किसो हुस्तेकी अलाई करनेमें अपनी हानि हो, तो भी गई अपनी हानिकी कुछ भी परवाद न करके हुस्तेकी अलाई करनेमें तरपर रहार था।

मक दिन उसके घरपर उसके पिताके एक श्रांत रहेती मित्र मेरागतके तीरपर श्रांत थे। उस्तेति श्रीर रहागोनी स्थानेत्रात्मकी चर्त कुछ प्रशंका रहत रहते थे। उसके साथ-साथ पर भी सुना श्रांति नयकेत्रात्में उसका रहत सबसे सहका है। करों के रे! इंग्रेड के देश के कार्य की रें!

在花山森門。

我我在一年就在中華書籍其中的是其事

不可作说话 一型的 棒球型 经收纳 跨雪管 数定货费

最大的一种 "你用 经通 经重额信息 计分离 机温度 贫困地名 制作的 数分类 医细胞 養 ?"

न्युपरायास अवस्थानम्, इस वाद्यावतः एकतः हैं, हिस्सी हासान सर्वत् हैं,कासान्त्रः (

कित मान्य पार्ट कर कर कर विकास के मार्थ के स्वारं के स्वारं के मार्थ के स्वारं के स्व

我得得一个美女的女子

भिरत्यका अन्य के का अक्टर का क्षेत्र के क्षेत्र कर कुछ के स्वास्त के कुछ होते क्षेत्र के क्षेत्र क

अपने लिए रस ली। यह देख अध्यापकजीने कहा—'प्यारेलाल, तुमने खराब पुस्तक क्यों रखी, तुम तो सबसे प्रथम रहते हो ?' प्यारेलालने कहा—'दूबरेको खराब पुस्तक देकर अपने-आप अच्छी रखना अन्याय है, क्योंकि दूबरेको ऐसी खराब पुस्तक देनेसे उसके मनमें दुःख होगा, इसलिए खराब पुस्तक अपने-आप लेना ही उचित समभकर मैंने यह पुस्तक अपने लिए रखी है।' यह सुनकर अध्यापक महाशय बड़े प्रसन्न हुए। सब लड़कोंके सामने अध्यापकजीने प्यारेलालके इस उदार-भावकी बहुत प्रशंसा करके सबको प्यारेलालको तगह उदारता-गुण धारण करनेकी देरणा की। जब यह बात प्यारेलालके घर मेहमानने सुनी, तो उसने चुता होकर प्यारेलालकी बहुत प्रशंसा करके उसे पाँच पुस्तकों और इनाममें दीं।

सातवाँ पाठ

जिनवाणीकी स्तुति

मन्दिरमें देवन्दर्शन धारमेके बाद निप्नन्तिधित सन्दि पदकार शास्त्रक्षीयी बन्दना करनी साहिए।

वीर निवस वरते निवसी, सुध-मीतमके मृत-कुंड देश हैं ; मोड-महावर भेड वर्ता, जमकी जड़ताय दृश्यामी है। अपने परीस्थित महिंद करी, वह भेग सम्मिती उठिश है ; ता दृष्टि कारड वीरमदी प्रति, मैं अपूर्ण कार मीम प्रसी है।१

the test of the second of the A STATE OF THE PROPERTY OF THE the first water water with, and only the wife of The first state of the state of the state of the state of

The world will be the state of the state of

the world are the second of the second

The state of the s Laborately of North Burners of the manufacture than the first while The state of the same and the same of the same of The state of the s 新門西班牙斯 中外的 医水杨素 高级人大学 医白生状的 中心 神经 新 中原 医甲状腺素 医甲状腺 医甲状腺 医甲状腺 医甲状腺

大大学 大きまれる 一般 一人ない から 一年 こうしゃ かんかいかけい あいかから the to the first the second to the second the second the second to the second graphilities a whole to be more with a second of the secon Bankylow accomp with by with by street of grant of property

who goes would have been been always about the sake 1990年 · 大学教 東京 李郎 東京 華 李明 新文章 我人民也不知了 如此是 如此 如此 我不知 有不知 我不

अपने लिए रख ली। यह देख अध्यापकजीने कहा—'प्यारेलाल, तुमने खराब पुस्तक क्यों रखी, तुम तो सबसे प्रथम रहते हो ?' प्यारेलालने कहा—'दूसरेको खराब पुस्तक देकर अपने-आप अच्छी रखना अन्याय है, क्योंकि दूसरेको ऐसी खराब पुस्तक देनेसे उसके मनमें दुःख होगा, इसलिए खराब पुस्तक अपने-आप लेना ही उचित समभकर मैंने यह पुस्तक अपने लिए रखी है।' यह सुनकर अध्यापक महाशय बड़े प्रसन्न हुए। सब लड़कोंके सामने अध्यापकजीने प्यारेलालके इस उदार-भावकी बहुत प्रशंसा करके सबको प्यारेलालको तरह उदारता-गुण धारण करनेकी बेरणा की। जब यह बात प्यारेलालके घर मेहमानने सुनी, तो उसने खुश होकर प्यारेलालकी बहुत प्रशंसा करके उसे पाँच पुस्तकों और इनाममें दीं।

सातवाँ पाठ

जिनवाणीकी म्तुनि

मन्दिरमें देव-दर्शन करनेके बाद निज्ञ-लिलित स्तुति पतृकार शास्त्रजीकी बन्दना करनी साहिए।

वीर-हिमायलने निकती, गुरू-गीतमके मृग-कृष्ट दर्ग है; मीह-महायल भेद चली, जगकी जहनातप दूर करी है। इ.स.पदीनिधि मार्डि रही, यह भंग तर्गितमी उल्लंग है; ता गृवि मारद-गंगवरी प्रति, में अल्लेश क्रिमीम भंग है।?

The state with the state of the A SECTION OF THE PROPERTY OF T

The first water making the same with the same of the s

भित्र पहलेको सम्मान । इसकी सेम्बर मानेस ।

The state of the state of the state of the state of

大型性 · 在日本 養、食物無品 我们 一年,如此在日本 的最后的多年的 在我不知的 素的人,可是有少年的 对对你的 教育的情况 數學語 电影响 the state of the same of the same 歌海中山西北京 化一分之品等于 都是 解其所述 最高 福江安 化二分子的 加小野女 化二次 京の本で、からのは、「本の」、 かまから、 あると からと からと からしゅうかん A CONTRACTOR OF THE STREET STREET

京都 解的分類 谁 是中国国际政治 海上 有情 化阿米斯宁 经外租股份 The State of the the State of t And the state of the second se policy that the state of the second is the second of the s They would have be sured to some a state of the

and the many with the second second 大學學 化油水油 医阴水流 医水流 医水流 医水流 医水流 医水流 阿里斯斯 新花 等 网络美国 医甲状腺 医甲状腺性 医甲状腺炎

आठवाँ पाठ

नीरोगता

नीरोगता समस्त सुखोंकी जड़ है। नीरोगताके समान संसारमें सुखका साधन और कोई नहीं है; क्योंकि शरीर नीरोग रहनेसे ही मनुष्य संसारके समस्त सुखोंके लिए नाना प्रकारके उद्योग या उपाय कर सकता है। रोगी मनुष्य ऐसा दुःखो और उदास रहता है कि उसे लिखना-पढ़ना आदि किसी भी कामके करनेमें उत्साह नहीं होता। अतएव मनुष्यको रोगोंसे सदा दूर ही रहना चाहिए। इसके लिए हमें अपना खान-पान और रहन-सहन ऐसा रखना चाहिए, जिससे कोई भी रोग उत्पन्न न हो; क्योंकि खान-पान और रहन-सहनकी गलियोंसे ही बीमारियाँ पैदा होती हैं। यदि मनुष्य अपना खान-पान और रहन-सहन टीक रखे, तो कभी भी कोई बीमारी न हो। यहाँ कुछ ऐसे उपाय क्याये जाते हैं, जिनके अनुसार चलतेसे रनुष्य जीवन-भर सब तरहके रोगोंसे यचकर गीरोग रह सकता है।

सीरोग हानेके लिए पहले सी कान करनेकी यादी जरूरत है। कान करनेने शरीरका मेल खुल जाता है और मेल रहनेके कारण शरीरने जो द्यंतिय निकला करनी है, यह नष्ट हो जाती है। जो लाग नित्य कान करने हैं जिनका शरीर निर्मल और संपंत रहता है। जो लोग करेको दिन नक काय नहीं करने, उनके शरारमें द्यंतिय अले लगता है जनका सुलक मूल नहीं

Trail South

the state of the s

The whole state who are a second to the second to MAN & MANER AND AND AND AND AND THE RESTAURANT THE BOY WITHOUT STATE & THE PART OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE P THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PERSON AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRESS OF T The first of the second was also been been as the first of the first o the state of the s 野性地區 海洋 物清楚的 對 的學 整件 大星的东南 Same half from the same of 10000 Pg

The same was a super sup you selected the selection of the select 我们看到我们 一种的一个我们是不是一个人的一个人的人的人的人的人的人的人的人 The state of the s * The state of the The second secon Secret for the secret of the s

तीसरी घार देवने पानीमें डुक्की लगाकर लोहेकी असले फुल्हाड़ी लाकर कहा—"यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है।" इस या लफड़हारने प्रसन्न होकर कहा—"हाँ, यही मेरी कुल्हाड़ी है।" इस प्रकार उस लकड़हारेकी निलेंभता और सचाईको देवका घह देघ यहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे उसकी अपनी कुल्हाड़ीके

सिया सीने और चाँदीकी कुल्हाड़ियाँ भी उपहारमें दे दीं।
लोभ करना बड़ा पाप है। यास्त्रोंमें लोभको पापका गण्
कहा गया है, क्योंकि लोभ ही सब पापोंका जनक है। लकड़हारेंने
सोने और चाँदीकी कुल्हाड़िका लोभ नहीं किया, तभी उसे
सोने और चाँदीकी कुल्हाड़ियाँ मुपन मिल गईं। यदि गर्
लकड़हारा लोभमें आकर सोनेकी कुल्हाड़ीको अपनी कुल्हाड़ी
कह देता, तो यह देव उसे भूटा समफकर उल्टा इंट देता, और
उसे अपनी कुल्हाड़ी भी वापस न मिलती। इसलिए लोभ
न करके न्याय और सचाईसे जो कुल मिले, उसीमें सन्तुष्ट

ग्यारहवाँ पाठ यह-म्तुनि

वंदीं दिसंतर गुरु-चरन, जग तरन-नारन जान;
ते भरम - भारी - रोगको, हैं राजवैद्य महान।
जिनके अनुप्रह जिन कभी, नीर्ट कटे करम-जंजीर;
ते मालू मेरे उर दगह, मेरी हरह पानफ-पीर।?

the factor of the first the first that the first the fir The state of the s The state of the state of the state of the state of 海 去鄉 品在本 老者 鬼迹 医红红 医流性性炎 化高级 THE REAL PROPERTY AND THE PARTY OF THE PARTY. to the state of th one of the second of the second of the state of the said of the s The state of the s A STATE OF THE STA the state of the state of the state of

जब शांत-मास तुपारसों, दाहे सकल वनराय;
- जब जमे पानी पोखराँ, थरहरे सबकी काय।
तब नगन निवसें चौहटें, अथवा नदीके तीर;
ते साधु मेरे उर वसो, मेरी हरहु पातक-पीर।
कर जोर 'भूधर' बीनवे, कब मिलहिं वे मुनिराज;
यह आस मनकी कब फले, मेरे सरहिं सगरे काज।
संसार - विपम - विदेशमें, जे विना कारन बीर;
ते साधु मेरे उर वसो, मेरी हरहु पातक-पीर।

वारहवाँ पाठ

जीव और अजीव

शिष्य—गुरुजी, जीव किसे कहते हैं ?

गुम-जिसमें जान या धान हो, यह जीव है-अर्थात जिसमें सुख-दु:खको माळूम करनेकी ताकत है, जो चलता फिरता, खाता-पीता और यहना है, उसे जीव कहते हैं। जैसे-मनुष्य, हाथी, घोटा, पशी, कोड़े-मकोड़े, पेड़, पहाड़ बगैरह।

शिष्य – गुरुजी, जानवर वगैरह तो जीव हैं, सो मालूम है। परन्तु पेड़-पटाड़ तो चलते-फिरते या सात-पीते नहीं, फिर पे जीव हैसे हैं ?

म्ह-पेट्-पटाट् भी साते-पीते और बढ्ने हैं। उनमें भॉल, फान, नाक और जीव नहीं है, पर वे जमीनने स्म सीवमा अपार शरीर बढ़ाते हैं. इस्टिए उनमें जान है।



जीव हैं। ये सब जीव सरदी, गरमी, धूप, छाँह, हवा या अस्य पदार्थ शरीरकी चमड़ीसे छुए जानेसे जान जाते हैं। इनके एक स्पर्श-इन्द्रियके सिवा और कोई इन्द्रिय नहीं होती।

शिष्य—दो इन्द्रिय जीव कौनसे होते हैं ?

गुरु—जिनके पहली स्पर्शन और दूसरी रसना-इन्द्रियं हो, चे दो-इन्द्रिय जीव हैं। जैसे—लट, केंचुआ, शंख, जोंक वगैरह। इनके स्पर्शन और रसना ये दो ही इन्द्रियाँ होती हैं।

शिष्य-तीन-इन्द्रिय जीव कौनसे हैं ?

गुर-जिनके (१) स्पर्शन, (२) रसना और (३) ब्राण-तीन इन्द्रियाँ होती हैं, उनको तीन-इन्द्रिय जीव फहते हैं। जैसे-चींटी, खटमल, जंबरीरहा

शिष्य-मन्न्छी, ततैया, भाँरा थादि के-इन्द्रिय जीव हैं ?

गुम—इनके (१) म्पर्शन, (२) रसना, (३) ब्राण और (४) चश्च-ये चार इन्द्रियाँ होती हैं, इसिटिए इनको चार-इन्द्रिय

शिष्य-- और पंचेन्द्रिय जीव कीन-से होते हैं ?

गुरु—मनुष्य, देव, नारकी तथा गाय, येल, घोड़ा, हाथी, चित्रिया, कीशा, कवृतर वगैरड पशु-पशी इन सबके पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं. इसलिए ये सब पंथेन्द्रिय जीव हैं।

शिष्य जीयके यम इतने ही भेद हैं **या भाँउ भी हैं।** गुरु उनको दो भेतोंमें भी याँगा जा सकता है--यम 'त्रम' भीर दुष्पर 'प्यायर'। जितके होंगे सेवर गाँव तक इत्स्याँ हों. उन्हें बल जीय कहते हैं। जैसे आदमी, माँगा, सीटी भीर

जीवको सताना पाप है ?' मनसुखने कहा—'वाह रे, इसमें पापका क्या काम है?' धनसुखने कहा—'भाई मनसुख, तुम यह छड़ो मेरे हाथमें दो और में इस छड़ीसे तुम्हें मारूँ, तो तुन्हें केसा छगे ?' मनसुखने कहा—'मेरे मारेगा, तो मुर्के बहुत चोट छगेगी।' धनसुखने कहा—'जव तुम्हें चोट छगेगी, तो इस पिल्ळेको क्यों न ऌगेगी ? भाई मनसुख, जिस प्रकार अपना जीव अपनेको प्यारा लगता है, उसी प्रकार कुत्ता, विही, गाय, वैल आदि सभी जीवोंको अपना जीव प्यारा लगता है। इनको मारनेसे हमारी तरह इनको भी बड़ा-भारी दुःख होता हैं। इसिटिए किसी भी जीवको सताना, दुःख देना या पीड़ा पहुंचाना कदापि उचित नहीं हैं। दूसरेको दुःख देनेसे 'हिंसा' नामका बड़ा-भारी पांप लगता है।' तब मनसुखने कहा— 'भाई धनसुख, तुम्हारे कहनेले अब मुफ्ते अच्छी तरह मालूम हो गया कि जिस प्रकार किसीके मारसेसे अपनेको दुःस्य होता है, उसी नग्ह सब जीवोंकी दृश्य होता है। क्यों भाई धनसुस, नुमेरे यह बात किसने समभाई ?' धनसुखने कहा – 'भाई, मैं जेत-पाठशालामें गट्ता है। हमारी पुरनकमें जीव-द्या पालन करमेथा यदत उपनेण हनन्तर

रेष - हिंडा बार स्कारकी माती गई है।

(१) संक्रमी-हिसा, (२) बारम्मी-हिसा, (३) उद्दर्श हैं। (४) विरोधी-हिंखा।

? अपने मनमें संकल्प या इरावा करके किसी और मारने या पीड़ित करनेको 'संकल्पी-हिंसा' कहते हैं।

२ - गृहकके घरमें नो किली चीजके कूटने या पोती रलोई बनाने, बुहारी देने आदि आरम्भ, अर्थात् घर-गृहरी जरुरी काम, प्रमाद-रहित होकर यताचार या सावधारी करनेपर भी चोंटी आदि अनेक जीवोंकी हिंसा होती है. उत्तर थारम्भी-हिंसा कहते हैं।

रे अन्तके कोटे भरने, अनाज आदि चीजें सरीदने की

श्रेयने, होती करने, कछ-कारखाने खोलने आदि रोजगार कर्ते. जो हिंसा होती है, उसको उद्यमी-हिंसा कहते हैं।

४—राजा-महाराजाओंको अपनी प्रजाकी रक्षाके लिए व देशमें शान्ति-धापन करनेके लिए शत्रुकी सेनासे युद्ध वर्गर करनेमें जो दिसा होती है, उसको विरोधी-हिंसा कहते हैं।

इन चार प्रकारको त्रम-हिसाओं में से गृहस्य केवल संकर्णा हिलाका हैयाग कर सकता है। अन्य तीन हिलाओंको यथाशि न्याम बार्नका मृत्योकी प्रयुक्त करना चालिल ১

त्रस - हिंसा चार प्रकारकी मानी गई है। जैसे— (१) संकल्पी-हिंसा, (२) आरम्भी-हिंसा, (३) उद्यमी-हिंसा और (४) विरोधी-हिंसा।

१--अपने मनमें संकल्प या इरादा करके किसी जीवको मारने या पीड़ित करनेको 'संकल्पी-हिंसा' कहते हैं।

२—गृहस्यके घरमें तो किसी चीजके कृटने या पीसने, रसोई बनाने, बुहारी देने आदि आरम्भ, अर्थात् घर-गृहस्यीके जकरी काम, प्रमाद-रहित होकर यहाचार या सावधानीसे करनेपर भी चींटी आदि अनेक जीवोंकी हिंसा होती है, उसको आरम्भी-हिंसा कहते हैं।

३--- अन्नके कोटे भरने, अनाज आदि चीजें सरीदने और वैचने, खेती करने, कल-कारखाने खोलने आदि रोजगार करनेमें जो हिंगा होती है, उसको उद्यमी-हिंसा कहते हैं।

४—राजा-महाराजाओंको अपनी प्रजाकी रक्षाके लिए या देशमें शान्ति स्थापन करनेके लिए शत्रुकी सेनारी सुद्ध यगैरह करनेमें जो दिसा होती है, उसको विरोधी-हिसा कहते हैं।

इत चार प्रकारकी चल-दिलाओं में गृहस्थ केयल संभागी-दिलाका त्याम कर सकता है। अत्य तीन दिलाओं को यथाणित त्याम करतेका गृहस्थेंकी प्रयत्त भरता चादिए, ऐसा भगवानका उपवेग है। इसलिए जिनकी आवक यतना हो, उतकी मन-ययम-भाय-और गृत कारित-अनुमीदनारी संभागी-दिलाका त्याम श्री अपरय श्री करता नादिए। और अत्य तीन प्रशास्त्री दिलाओंका, जितनी जितता यह होने, यथाणीक त्याम करना नादिए, अर्थाम्



है। दासीने भय-चिकत होकर पूछा—'छ्छा, तुम इस तरह छटपटा क्यों रहे हो?' छड़केने कहा—'तू माको बुछा छा। उनसे जब तक मैं अपने दु:खकी बात न कहूंगा, तब तक मैं किसी तरहसे भी नहीं जी सकता।'

दासी इस यातको सुनकर घवराहटके साथ उसकी माके पास गई, और उनसे यह वात कही। सुनते ही मा अपने लड़केके पास दौड़ी-दौड़ी पहुंची। स्वरूपचन्द्र अपनी माताको देखते ही गलेमें हाथ डालकर अपने आंसुओंसे माताका हृदय सींचने लगा। उसे इस तरह रोते देख माताने वार-वार उससे दुःसकी यान पूछी। बहुत देरके बाद उसने गद्गद स्वरमें फहा- 'मा, मुभे क्षमा करना। आज मैंने दुए वालककी तरह बहुत ही खराब काम कर डाला है। मैंने एक झूठी बात कही है, और तुमसे भी छुपा रखी है। मैंने अपने मित्रोंके साप म्रेलने समय एक असत्य बचन कहकर उन्हें जीत लिया, और उस जीतके लिए. मेंने यह बात सर्यथा छुपा रणी । में अच्छी तरह जानता हूँ कि झूट बोलना बड़ा पाप है। मुर्फ यहाँ या परछोक्त्रीं कभी-न-कभी इसका यहुत सुरा फल भौगना पप्रैगा। इम्बे निया बात प्रगट हो जायगी, तो गय कोई गुके मिथ्या-बादी (सुदा) समक्रकर गुणा करेंगे। इसी वातकी चिलासे मेरा मत यहून व्याकुछ हो गया है, और इसीटिय हैने मुझें कुराया है। - इतना कहकर यह माने मृतकी और आशा-मरी अभिषंधि देशते रहार ।

इपके बक्तमें स्वरूपमानकी माने बदा - भीता, जी कीई

जिसे गुए अपराधको स्योकार या मंजूर काके उसके लिए प्रशासाय करता है और मित्रियमें अपनेको उन सपराघोंसे दूर रफ़नेके लिए हट्-प्रसिध हो जाता है, उसका थपराच सप जगह माफ हो जाता है। यदि इस तरहका वुरा फाम दागे फिर फ्लो नहीं करोगे और इस कमूके लिए मित्रोंसे ग्राफी गाँग होंगे, तो तुर्ग्ह सप गोई प्यार फोरी। एक चार अपराध . मरनेसे तुम पुरे गडी महत्वा सकते ।"

स्तरुष्यंद्को अपनी मानापे इस प्रकार गोग्य वचन सुनकर ष्णुन सन्तोष हुआ और यह आरामसे सो गया। दूसरे हिन वित्तारंते उद्देशह ग्रह अपने मित्रोंके पास गया, और अपने उस भएराभको प्रगष्ट गर्दे उत्तरं समा गौगी, गौ मय जमे उसे समा भरके उसकी प्रशंसा फरने लगे। उस दिनसे फिर फर्मा एकप्रयाद्वे विध्या-भाषण नहीं किया।

है बारकों, जगाउसे पेना कोई भी भादमी म होगा. विसर्थ बित्रो प्रकारका श्राप्ताच्या म हुआ हो । प्रस्तु को कोई स्वप्ताच हो शामेके बाब उसे ध्वीमतर कर तेते हैं। सीर अविष्यमें सेमा भेगताथ म करतेकी हैं? प्रतिसा कर होते हैं, में उस सीसीसे मतुष्य समये असे हैं।

हिमको और रक्तापन है, स्वयान अस्त्य-आपन्छा स्थानकर क्षाच्याणं बाज्यः सम्बा व्यक्तिः।

है। दासीने भय-चिकत होकर पूछा—'छहा, तुम इस तरह छटपटा पयों रहे हो ?' छड़केने कहा—'त् माफो बुला ला। उनसे जय तक मैं अपने दुःखकी चात न कहूंगा, तब तक मैं फिसो तरहसे भी नहीं जी सकता।'

दासी इस यातको सुनकर घवराहटके साथ उसकी माफे पास गई, और उनसे यह बात कही। सुनते ही मा अपने स्टड्केके पास दौड़ी-दौड़ी पहुंची । स्वरूपचन्द्र अपनी माताको देखते ही गलेमें हाथ डालकर अपने आंसुओंसे माताका हृदय सींचने लगा । उसे इस तरह रोते देख माताने वार-वार उससे दुःखकी बात पूछी। बहुत देखे बाद उसने गहुद स्वरमें कहा- 'मा, मुभे क्षमा करना। आज मैंने दुए बालककी तरह यहत ही खराब काम कर डाला है। मैंने एक झुटी यात कही है, और तुमसे भी छ्या रखी है। मैंने अपने मित्रीके साथ केलने समय एक असत्य बचन कहकर उन्हें जीत लिया, और उस जीतके लिए, मैंने वह बात सर्वथा छुपा रखी। मैं अच्छी तस्त्र जानता हूँ कि झूट बोलना बड़ा पाप है। मुके यहाँ या परहोक्सें कमीन-कभी इसका बहुत युरा फल भौगना पर्या। इसके निया बात प्रगट हो जायगी, तो गय कोई मुक्षे मिश्या-वर्षा (सूटा) समस्यार गुणा करेंगे। इसी यालकी निम्तासे मेरा मत बहुत व्याकुल हो गया है, और दर्गालिए प्रीने नृष्टें बुटाया है। - इतरा कहकर यह माने म्हमी और आमा-भूगी अविकेशि देखने हता।

इसके इक्ती स्वरपकादकी माने कहा। भीता, जी कीई

णिये हुए सपराधको म्योकार या मंजूर मतके उसके लिए प्रधालाप करता है और मणिष्यमें अपनेको उन भपराधीसे दूर रमतेके लिए हर्-मतिल हो। जाता है, जसका सपराध सप जगह माफ हो जाता है। यदि इस तरहका युरा फाम दांगे फिर ममां वहाँ बरोगे और इस प्रमुख्के लिए निश्रोने माफी मीग लींगे, तो तुन्हें नय कोई व्यार करेंगे। यक चार अवस्था मन्तेले तुम युरं नहीं महला समते हैं।

ं स्वरूपनंदयो भएनी मानाके इस प्रकार योग्य वनन सुनकर षद्भा सन्तीय हुमा और यह भागमसे की गया। इसरे जिन चित्तरमें उटका यह धपने मित्रोंके पास सया, और अपने एस संप्राधको प्रमुट बारके उनसे धमा मर्गित, हो सब जने उसे समा बर्फे उसकी प्रतिस्त करने हमें। उस दिनसे किर कर्मा क्षेत्रप्रवाद्वे निध्या-भाषण नहीं किया।

हैं बालको, जागाने गेन्स कोई भी अध्योग म होगा, जिससे विस्ता प्रकारका अपराध म दुला हो । परन्तु की कीई जपराध ही जावेद्रे पान उसे व्यक्तित पर लेने हें और मिण्यमें पैसा व्यास्त्रम् स करतेको हाः प्रतिका कर होते हैं, में उस भी कोहें महाम करने जाते हैं।

Bridge Big Rate distriction about the second र्वे क समार्थ कालाह कालाह कालिए ह

उन्नीसवाँ पाठ सत्यकी महिमा

सौंच बराबर तप नहीं, झुठ बराबर पाप ; जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे 'आप'।? सत्य-नावपर जो चढ़त, या भव-सिंधु अपार ; आप तरे अरु औरको, देवे पार उतार।२ जहाँ सत्य तहँ धर्म है, जहाँ सत्य तहँ योग ; जहाँ सत्य तहें श्री रहत, जहाँ सत्य तहँ भोग ¹³ जो श्रायकका मृत कहे, नितप्रति साँची बात ; मान-प्रतिष्ठा पायकर, जगमें होय विख्यात ।४ एक साचकी आँटमें, लाखनका व्यापार ; चलता है बाजारमें, यामें नाहिं लगार।^५ झुटेका जगमें घटे, मान, बढ़िह अपमान ; *बृ*ट वचनके पापनें, पाबे दुःख महान्∣६ इंट कारण सब जन सदा, बोलो साची बात ; मन्य-अण्वत धारकर, सुख भागा दिन-रात ।७

बीसवाँ पाठ अहार या भोजन

संसारके सभी जीवोंको आहारकी अत्यन्त आवश्यकता है। वर्षोक दिता आहारके कोई जोव जी नहीं सकता। और सब निष्योंको भी अल्हार स्वकास तैयार मिस्तवा है, परस्तु सनुस्पर्क अपना कोहत रथयं तैयार करना पहला है। सनुस्पर्क आति



एजम हो जाता है, इसिलए दिनमें चार या पाँच वजे भोजन अवश्य करना चाहिए। रात्रिको भोजन करनेसे अनेक जीवोंकी हिसा तो होनी ही है, साथ हो भोजन करके सो जानेसे वह अच्छी तरह पचता नहीं और अनेक रोग पैदा करता है।

- (५) प्रतिदिन एक ही नियत समयपर भोजन करना चाहिए, नियन समयको टालकर अथवा घंटे-आध-घंटे पहले ही भोजन करनेसे हानि होती है, इसलिए नित्य नी बजेसे बारह बजेके भीतर, अपने निर्देष्ट समयपर ही भोजन करना चाहिए। नी बजेसे पहले किसी तरहका भोजन या दूध, छंटाई, चाय वर्षेरह पतले पदार्थ छभी नहीं खाना-पीना चाहिए।
- (६) सदा एक ही प्रकारका ओजन नहीं करना चाहिए। हैसे-जैसे ऋतु बदलती जाय, बैसे-दैसे भोजन भी बदलते रहना चाहिए। साथ ही देश, काल, उमर, उद्यम, रुचि और शरीरके यलके अनुसार भाजन भी बदलते रहना चाहिए।

इक्षीमयाँ पाठ चोरीका फल

मंगाराम केता पाठणाला पहुँचे जाया करता था। एक दन यह गाठणालांचे किसीका एक चाकु जुक्कार अपने वर से आया: इस्तार उसको मादे युद्ध भी नहीं कहा, यिक भमकारेषे यहाय उस चाहुको देवका उनके सिंद याजानको विटाई मँगया दा: अब की संवासनाको किहाकित लालना लग गया और यह संबंध करतेको साकने कहते लगा। यह तो दुद्ध सुराकर

चोरकी यह वात सुन सव लोग उसकी माको ही धिकारने लगे। इसलिए हे वालको, चोरी करना, असत्य बोलना आहि जो-जो बुरे काम हैं और जिन्हें सब समभदार लोग बुरा कहते हैं, उन्हें तुम कभी और किसीके भी कहनेसे मत करो । अगर कर्भा एक बार भो कोई बुरा काम करोगे, तो धीरे-धीरे गंगारामकी तरह तुम्हारी भी वुरी आदत पड जायगी ; क्योंकि वचपनमें जो स्वभाव पड़ जाता है, वह मस्ते-दम तक रहता है। इसिलए वचपनसे ही अच्छे-अच्छे काम करना सीखो । जिस कामको माता-पिता आदि गुरुजन दुरा कहें, उसको कदापि मत करो । और किसीकी मा अगर गंगारामकी माके समान हो, तो उस छड़केको चाहिए कि वह अपनी माको गंगारामकी ^{यह} कहानी पढ़कर सुना दे । वैचार गंगारामको अगर पहलेसे ऐसी कोई कहानी मालूम होती, तो यह माको सुना देता और फॉर्मामे यच जाता ।

वाईसवाँ पाठ विद्याकी महिमा

नुप-पद् अरु निद्या कबई, होत न एक समान ; नुपति पुज्य निज देशमें, सब जग विद्यावान ।१ पंडितमें सब गुण लसीई, मृद्र दोपकी स्वान ; सदस मुद्रमें कर कहा, पंडित एक सुजान ।२ पर-नर्शको मान-सम, पर-धन धृति समान ; सब जीवनको आप सम, सिने सो पंडिय जान ।३

असदाचारी वालकोंकी कथा खोल दी और विद्याधियोंसे वह दिया कि जो लड़के सदाचारी हों, वे सदाचारी वालकोंकी कथा^{में} वेटें, और जो असदाचारी हों, वे दूसरी असदाचारी वालकोंकी कथामें वेटें। यह आज्ञा सुनकर सब विद्यार्थी सदाचारी कथा^{में} जा वेटे और असदाचारी कथामें एक भी लड़का नहीं वैटा।

यह देख अध्यापकजीने कहा- -तुम तो सबके सब सदाबारी कक्षामें वैट गये, ऐसा नहीं चाहिए। तुममें से जी-जी छड़्कें असदाचारी हैं, उनको दूसरी कक्षामें वैठना चाहिए।

उन लड़कोंमें से स्वक्षपचन्द नामक एक सुवीध लड़का था, वह उटकर अध्यापक महाशयको हाथ जोड़कर विनयके साथ वोला—पंटितजी, सदाचारी लड़के कीन होते हैं और असदी चारी कीन होते हैं, इसका भेद समभावें, तब आपकी आजाकी पालन हो सकेगा।

अध्यापक—जो लड़का पाप-कार्य यानी बुरे काम करता है। वद असदाचारी हैं। और जो पाप-कार्य नहीं। करता। और अप^{ने} आवरण टीक रचना है, वह लड़का सदाचारी है।

ग्यमप्यन्द - पाप-कार्य कीन-कीनसे हैं, रुपाकर बतार्य । अध्यापक हिंसा बारना, चोरी करना, झूठ बोलना, सुशील सेवन करना, परिव्रहका संबद करना, मायाचार बानी रुख-कपट करना, कीच यानी सुरका करना, मान-अहंकार या वर्षट करना, जुला सेलना, सीम साना, मिद्रम, भंग, नमाम अहि संबंध चंडी परिना, लड़ाई-सगड़ा करना, चुगला करना, निर्देश करता किल्लों हे व अध्य स्थाना, देव, गुरु, शास्त्र नथा गड़ीका

फुछ समय वाद धन्नूलाल विद्यार्थी अपनी पुस्तकको दे^{छना} छोड़ खिड़ककी राहसे सड़ककी तरफ देखने छगा। उसके पास रूपचन्द वैटा था, उसने पंडितजीको कह दिया—"देखिये पंडितजी, धन्नूलाल सड़ककी तरफ देख रहा है।" पंडित^{जीने} धन्नूळाळको तरफ देखा, तो वह सावघान होकर ^{अपनी} पुक्तकको पढ़ने लगा। तय पंडितजीने रूपचन्दसे पूछा-"तुम्हें कैसे माऌ्म हुआ कि धन्नूलाल सड़ककी तरफ दे^{छत} था ?" तब रूपचन्दने कहा –"पंडितजी, मैंने अपनी आँखोंरै देखा है—बह सड़ककी तरफ देख रहाथा। मैं क्या आ^{पके} सामने झूट बोळता हूं ?" पंडितजीने कहा—"वेशक तुम झूट नहीं योळते, परन्तु जिस वक्त तुम धन्नूळाळकी तरफ देख रहे थे, उस वक्त नुम्हारी दृष्टि क्या पुस्तककी तरफ थी ?" यह ^{बात} सुनकर कपचन्द शरमा गया, और गर्दन नीची करके अप्^{ती} पुन्तककी तरफ देखने लगा। तब पंडितजीने रूपचन्दकी पीटपर दाय फेरफर कहा—"भाई, दूसरेका दोप देसनेके ^{हिए} अपनेको दोषा नहीं यनाना चाहिए। क्योंकि बास्तवर्में वही दोषी है, जो दूसरोंके दोष देखा करना है। दूसरोंके दोष देखनेवाळोंको ही छोग दोवी समभने हैं। आज तो में तु^{हरे} माफ करता हैं, पर फिर कवी ऐसा काम मत करना।"

इमलिए तुमी भी अपने गुण और दूसरोके अपग्री करावि मगर नहीं करना चाहिए।

लालनमें बहु दोप है, ताड़न है गुण-खान; तिह कारण सत शिष्यको, ताड़, लड़ावन हान । श्र सुरिम-पुष्प-युत एक तरु, सब बन करत सुवास; त्यों गुनवान सुपूत इक, निज कुल करत प्रकास । श्र अग्नि-महित तरु एक ही, करत सकल बन दाह; त्यों कृपूत निज बंशको, नाश करहि छिन माह । ६ वस्त्राभृषण सहित जड़, सुजन-सभा विच जाय; जब लिग कछ बोले नहीं, तब लिग शोभा पाय । ७ गज-द्वार कुसमय, समर, उत्सव, व्यसन, मसान; हनमें जो साथी सदा, प्रकृत बन्धु सोई जान। ८

अट्टाईसवाँ पाठ रात्र-भोजन-त्याग

हीगालाल ययों मोतीलाल, इतना जल्दी - जल्दी फर्टी जा गरे हो ?

मोर्तालाल—भोजन करने जा रहा हूँ। हरिरालाल नो इतने उताबले क्यों भागे जा रहे हो ? मोर्तालाल - शाम होने आई,- अय जो देर करूँगा, तो रात हो जायगी।

होराकाळ - रात हो जायगी, तो क्या मुका ? मोतीकाळ - रातमें जीमना जो न-हो सफेगा। हीराकाळ - क्यों, रातमें जीमनेस क्या हार्ज है ? मोतीकाळ - क्यों, तुम-इतना भी नहीं जागते ?

7.

उनतीसवाँ पाठ भेड़क और बैल

एक तालावके किनारे दो वैल आपसमें लड़ ^{रहे थे}। उस तालायमें बहुतसे मेंढ़क थे। उनमें से एक मेढ़कने सिर उटाकर दूसरे मेढ़कसे कहा—भाई, ये वैल तो आपसमें ^{लड़ते} लगे, अब क्या करें; अपना क्या हाल होगा? यह सुनकर दूसरे मेड़कने कहा— ये बैल लड़ते हैं, तो लड़ने दो। हम मेड़क जल जनतु हैं और ये बैल हैं,- हमारा इनसे क्या सन्वन्ध, जी इनकी लड़ाईसे डरें या चिन्ता करें ? तब पहले मेहकने कहां-भाई, तेरा कहना ठीक है, अपना सम्यन्त्र तो इनसे कुछ नहीं है ; परन्तु ये छड़ते-छड़ते इस छोटेसे तालावमें आ पहें, तो अपना क्या हाल होगा? इतना कहते-कहते ही एक वैली दृषरे दैलको धका दिया, तो वह तालावमें आ पड़ा और उसके लपाटेमें वह दूसरा मेहक भी आ गया। पहला मेहक बोला-देला भाई, तुने कहा था कि हमारा इनसे क्या सम्बन्ध है, जी चिन्ता करें ? अब तो प्रत्यक्ष फल देख लिया ? अपने ऊपर आ पहते, तो हमारी जान जाती या नहीं? भाई, जहाँ छड़ारी हो, उपके पास भी खड़ा न होना चाहिए।

इमिलिए हे बालको, तुम परस्पर कलह (लड़ाई) कहापि न जिया करो, और अन्य किसीमें लड़ाई होती हो, तो तुम उमके पण्य खड़े भी न रहो। यदि खड़े रहीने, तो तुम्हारे उपर मी मेड़ रोका सा स्वता आ सकता है।



रकन्य कदते हैं। धूप, छाया, अँधेरा, चौदनी, छकड़ी, फंफड़, पत्यर, मकान वगैरद्व सब पुदुगलके स्कन्ध या पर्याय हैं।

शिष्य—स्पर्श किसे फहते हैं और उसके कितने भेद हैं?

गुर—स्पर्श उसे कहते हैं, जो स्पर्शन-इन्द्रियसे यानी छूमेसे जाना जाय। स्पर्श आठ प्रकारका होता है—(१) क्लिप्स (चिकना), (२) कक्ष (क्रवा), (३) शीत (ठंडा), (४) उण्ण (गरम) (५) मृदु (कोमल या नरम), (६) कर्कश (कठोर या फड़ा), (गुर (भारी), (८) लघू (हलका)। जैसे—घीमें स्निप्स, रक्ष, पानीमें शीत, अग्लिमें उण्ण, मक्यनमें मृदु, पत्थरमें लोहेंमें गुरु और दर्धमें लघु स्पर्श है।

शिष्य—रस किसे कहते हैं। और यह कितने मार्

गुरु—रस उसे कहते हैं, जो रसना-इन्द्रिय :
जाना जाय। रस पाँच प्रकारका होता है—(१)
या चरपरा), (२) कटु (कडुआ), (३) कपाय (१)
(गटा) और (५) मधुर (मीटा)। जैसे—मिरचमे
कटु, आँवलेमें कसेला, नीवृमें सटा और ।
मीटा रस है।

शिष्य--गन्य किसे कहते हैं। और सह कि गुर--गन्य दसे काते हैं, जो झाण-इस्ट्रि-जानों जाय। गन्य हो प्रकारकी होती हैं --एक और हसरी दुर्गस्य (यदक्)। जैसे--गुला-भीर महाके तेलसे दुर्गस्य।

जिल्ला वर्ण विके बहुत है और बहु,

स्कन्य कहते हैं। धूप, छाया, अँधेरा, चाँदनी, छकड़ी, कंकड़, पत्यर, मकान वगैरह सब पुदुगलके स्कन्य या पर्याय हैं।

शिष्य-स्पर्श किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं?

गुरु—स्पर्श उसे कहते हैं, जो स्पर्शन-इन्द्रियसे यानी छूनेसे जाना जाय। स्पर्श आठ प्रकारका होता है—(१) क्रिम्प (चिकना), (२) रुक्ष (कृषा), (३) शीत (ठंडा), (४) उच्च (गरम), (५) सृदु (कोमल या नरम), (६) कर्कश (कठोर या कड़ा), (७) गुरु (मार्रा), (८) लघु (हलका)। जैसे—घीमें स्निम्प, बालूमें रुक्ष, पानीमें शीत, अग्निमें उच्च, मक्खनमें सृदु, पत्थरमें कर्कश, लोहेमें गुरु और रहंमें लघ स्पर्श है।

शिष्य—रस किसे कहते हैं और वह कितने प्रकारका है है गुरु—रस उसे कहते हैं, जो रसना-इन्द्रिय यानी जीभसे जाना जाय। रस पाँच प्रकारका होता है—(१) तिक (तीता या चरपरा), (२) कट्ट (कडुआ), (३) कपाय (कसैला), (४) अह (खटा) और (५) मधुर (मीटा)। जैसे—मिरचमें चरपरा, नीममें फट्ट, ऑवलेमें कमेला, नीवृमें खटा और गुड़ या चीनीमें मीटा रस है।

शिष्य-गन्ध किसे कहते हैं और वह कितने प्रकारको हैं।
गुरु-गन्ध उसे कहते हैं, जो ब्राण-इन्द्रिय थानी नाकसे
जानी आय। गन्ध हो प्रकारकी होती है-एक सुगन्ध (गुरुष्)
और दूसरी दुर्गन्ध (यदवु)। जैसे--गुठायके कृतमें सुगर्ध और म्हाके देलमें दुर्गन्ध।

शिष्य वर्ण किसे कहते हैं और यह कितने प्रकारका है?



रक्तस्य कहते हैं। धूप, छाया, अँधेरा, चाँदनी, छकड़ी, कंकड़, पत्थर, मकान वगैरह सब पुदुगलके स्कन्ध या पर्याय हैं।

शिष्य—स्पर्श किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं?

गुरु—स्पर्श उसे कहते हैं, जो स्पर्शन-इन्द्रियसे यानी छूनेसे
जाना जाय। स्पर्श आठ प्रकारका होता है—(१) क्रिण्य
(चिकना), (२) कक्ष (कखा), (३) शीत (उंडा), (४) उप्ण (गरम),
(५) सृदु (कोमळ या नरम), (६) कर्कश (कठोर या कड़ा), (७)
गुरु (भारी), (८) छम्नु (हलका)। जैसे—धीमें स्निण्य, बालुमें
रक्ष, पानीमें शीत, अग्निमें उप्ण, मक्खनमें सृदु, पत्थरमें कर्कश,
लोहेमें गुरु और रुद्ंमें छम्न स्पर्श है।

शिष्य—रस किसे कहते हैं और वह कितने प्रकारका है ? गुरु—रस उसे कहते हैं, जो रसना-इन्द्रिय यानी जीभसे जाना जाय। रस पाँच प्रकारका होता है—(१) तिक्त (तीता या चरपरा), (२) कटु (कडुआ), (३) कपाय (कसेटा), (४) अह (लटा) और (५) मधुर (मीटा)। जैसे—मिरचमें चरपरा, नीम्में कटु, ऑवलेमें कसेला, नीव्में खटा और गुड़ या चीनीमें मीटा रस है।

शिष्य - गर्य किसे कहते हैं। और यह कितने प्रकारकी है। गुरु - गर्य उसे कहते हैं, जो ब्राण-इन्द्रिय यांगी नाकरी जाती प्राय । गर्य दी प्रकारकी होती है - एक गुगर्य (गुरुष) और दूसरी दुर्गस्य (बदवू)। जैसे - गुलायके जुलमें गुगर्य धीर महाये देखें हा हुंग्स्य ।

जिल्या वर्ण किसे कहते हैं और यह जिल्ही प्रकारका है?

युर-वर्ष (हर या रेन) की बहुत हैं, की केंद्र किया पार्थ श्रीकोल सामा नाम । यह यह यह प्रमाण हेना हैन्सी हरन (may), (e) nic. (i) rm (con), (u) die (dice) wir ि रोत राजेन्। होने न्योत्तरी बच्चा बोली बच्चा विद्वास महत्त्व हर्तास संदर्भ की हर्ता हर्ता हर्ता करे हैं।

बिलाहा अस्य कोर बहुमानीहरू अपानी प्रश्नेट, कार सहिता, सामा क्री मीर करते गोता । यद विकास प्रस्तात है स्टब्स के स्टब्स् सुधा है। पुरासके संस्था प्राप्त केले हैं।

क्षित्रक अस्तार प्रदेशको प्रतिकृति विशेष करते हैं।

the address of which his wife the temples कार्यानी कार्यकार के बामाने स्वतं कुमा की व कुछ । वास्तं कामान the name of the same of the same of the same of ACTION OF THE PERSON NAMED AND PARTY entries of a state which mindely in the separate which the from consider the week?

And the same of th the water with the same of

The said of the sa manufaction that the same and the same is

यह बात ध्यानमें रखना चाहिए कि धर्म-द्रव्य लोकमें न होता, तो सब पदार्थ एक ही जगह पड़े रहते, और अधर्म-द्रव्य न होता, तो सब पदार्थ उड़े-उड़ फिरते। दूसरी बात यह कि यहाँ धर्म-अधर्म शब्दसे साधारण धर्म-अधर्म न समफ लेना, जिनका अर्थ

पुण्य-पाप है, या आत्माको मुक्त करनेवाला रत्नत्रय धर्म है। शिप्य—काल-द्रव्य क्या है, और उसके कितने भेद हैं ?

गुरु—फाल-द्रव्य उसे कहते हैं, जो समस्त द्रन्योंकी पर्याय (हालतें) बदलनेमें सहकारी हो। काल-द्रव्य (१) निश्चय-काल और (२) व्यवहार-फालके भेदसे दो प्रकारका है।

शिष्य—निश्चयकाल किसे फहते हैं ?

गुर-लोकाकाशके प्रत्येक प्रदेशमें निश्चय-कालका एक-एक अणु, घड़ेमें बाजरेकी तरह, भरा हुआ है। ये कालाणु असंस्य और मृक्ष्म है, जो नेत्रोंसे नहीं टीव्यते ।

त्रिष्य—स्यवहार-काल किसे कहते हैं ?

गुर--- जपर बनाये हुए निध्य-काल-द्रव्यकी पर्यायको व्यवहार-काल कहने हैं। जैसे -- पल, घड़ी, पहर, दिन, सप्ताह, पक्ष (पलवाड़ा), मान, वर्ष वगैरहा।

शिष्य —शाकाश किसे फहते हैं और यह कितने तरहका है। गुरु —शाकाण उसे फहते हैं, जो समस्त पदार्थोंको अयकाश यानी रहतेको जगह दे। यह यह पदार्थ है, जिसमें समस्त हुस्य

रहते हैं। यह आकाण सर्वत्यापी एक ही अखंड पदार्थ है, परन्तुं लोकाकाण और अलोकाकाणके भेदमें दो अकारका कहलाता है। लिएय - लोकाकाण और अलोकाकाशके किसे कहते हैं?

पुर-शास्त्रामी वहाँ हर जीत, हुएए, यह स्थाने हीत बान में बांग द्वार अता है, जामें भाषात्राओं की लेगायात नाम है। और संभावकारों कार वार्थ और सोप-पुरुषोंस the statement statement to the problem with the

मित्रा सुमाने, आर्थे को धर्म पाईको कर सम्म रिका है, तर क्या क्षात है।

कि नाबार के प्रसं की देवह के देव का बच्चे हैं।

हकतीसवाँ पाट

Egglide dans : British

यम विक्र मामाने, दिनोंने वेड्को दानावे को स्था कर। and ancient right the grands directly by the रतिहा विकास अस्त अस्त असे राज्य मुस्कित एक स्वास्था । सूचित व्यापाल क्षेत्रकाके करोड़ कर्रोक्ष करें सहार्थका, काल क्षेत्रका के betal of a specific that the same of the s मात्रिके । विस्ति के कार कार की कार कार के कार कार की 我们在我们就在我们的时候,我们就是一个人的,我们就是一个人的。 The state of the first mentioned a second to the same of the second to t 医人名英格兰 在一年 在一年 在人工 人名西西 大大大大 美女 不知道 多种

नीचे किसी शिकारीने सिंहको फँसाकर मार डालनेके लिए जाल विला दिया। सिंह सदाकी तरह वहाँ आया, और आते ही जालमें फँस गया। उस जालसे छूटनेके लिए ज्यों-ज्यों वह जोर फरता था, त्यों-त्यों जालमें बुरी तरह जकड़ता जाता था। जिससे चारों पाँच हिलानेमें असमर्थ होकर उसने जीनेकी आशा छोड़ दी और बड़े जोरसे चीकने लगा। उसका चीकना सुन यही चूहा वहाँ दीड़ा आया और अपने जीवनदाता सिंहको महाकप्रमें पड़ा देखकर उसने मनमें विचारा कि उस दिनके मेरे जीवन-दानका यदला देनेका यही अवसर है। तब उसने सिंहसे फहा—महाराज, घवड़ाइये नहीं। आपका दास हाजिर हो गया है। मुक्तमें जो कुछ सेवा बनेगी, ककँगा। इतना कहकर उसने वह जाल अपने दाँतोंसे काटकर सिंहको छुड़ा दिया।

सिंहने मन-ही-मन विचार किया कि उस दिन में इस च्हेंकी धातपर हैंसा था, पर अब मेरे ध्यानमें आया कि समयपर एक तिनका भी काममें आता है।

यालको, इस कहानीसे तुम्हें यह शिक्षा लेनी चाहिए कि इनियामें किसीको छोटा समक्रमा ठीक नहीं। समयपर छोटेसे छोटा किया हुआ उपकार काम धाना है। अपने साथ जिसीने इपकार किया हो, तो उसको कहापि नहीं भूलना चाहिए, और कहानीके इस चुहेकी तरह अपने उपकारीके दुःख्यें उसका तन, मन और धनसे यथाशिक सहायता पहुंचाकर उसका हुख हुए करतेने तहार रहता चाहिए।

वत्तांमवा पाठ

गह रातं साग्य सा नियम

रे - याम जिल्ला ही सके, उत्तर सकता ही सरका पाहिए। हुत्र मात्र हार्गाक वर्ष मात्रा धार्मा । देशा वर्षे स्टीसे पाणिका बहेलद मही होता. और अंग्रेट की ब्लाव सहार है।

के 1- तहरे बहुत्व देवर होने बहुदालुद हैं। यहरे बहुदाहरू काम दर्शिक्षेत्र ह धिता बार्डेटरी कोई भी काल पहन नहीं रहेगा ।

है करते करता अवले कर सकते हो, तसे पुरस्तीन स्कृत स्तामा सर्गहर । स्थाने मूच सम्बोक नहीं स्ट्रीते ।

में न बारती हैं तह कार्युंचे दाहते ही जा के कार्युंचा विकास ग्रह मधी । देखा भवति हुम किर्मान मही वर्णने ।

भारती बोध किया है। सम्बंद की सम्बंद करें हैं दिले, सम्बंद क मान्त्रे बराग मही भारते, यहते बार्गामां सः नार्व्यते । बार्गा हाम free man earth,

रेण्याको किसाने रूपको सर्वे का स्टब्स कर विकासको । fire treated with evening a white;

我不敢 學致 學生學 看了一個 医神经性 经净 经现代的证 医神经 朝史的表示 ा देशको समार्थ की बच्चे का कुछाने स्रोक्टे किया। 教育實施 men grant i

京北海縣 柳紫色等的黄河南西南部, . 意味 學到 The state of the s

१०—जो कुछ सुख या दुःख होता है, वह अपने ही किये हुए यानी पाप-पुण्यके अनुसार होता है, और उसका फल अपनेको ही भोगना पड़ता है, हमेशा इस वातको याद रखके काम किया करो। ऐसा करनेसे तुम हमेशा शान्ति और सुखसे रह सकोगे।

तेतीसवाँ पाठ नीतिके दोहे

जहाँ न नृप, श्रोत्रिय, सरित, और वैद्य, धनवान ; वास करें नहिं एक छिन, पंडित-जन तिहिं थान ।१ अद्भर नहिं जिहिं देशमें, बन्धु, वृत्ति, नहिं होय ; निह विद्याको आगमन, तहाँ न वसिये कीय।२ मनके चिन्ते कार्यको, प्रगट करो मत कोय ; प्रगट कियेतं कार्य बह, सिद्ध न कबह् होय।३ कुनदि, कुदेव, कुजीविका, अवर कुट्रव्य, कुनार ; निन्दित भोजन-पान बुध, तजहु नित्य सुविचार ।४ कण, व्याघी अरु अधिका, शेप न राखहु लेश ; ये तीनों दोपिंह रहें, क्रम - क्रम बढ़त हमेश ।ध सुत, नारी, सेवक सदा, जा नरके बदा होय ; सम्यतिमें सन्तोप पुनि, स्वर्ग यहींपर सीय |६ दृष्ट्रा नारी, मित्र शट, उत्तरदाता भृत्य ; मंप-युक्त गृह वाम पुनि, मृत्यु हेनु ये सत्य।७ कोकित रूप जु मधूर स्वर, पति-सेवा निय जान ; विद्या रूप कुरूपको, क्षमा रूप नपवान ।८

चीतीसर्वे पाठ प्रतिस्त

मारिएको बीमीम क्यांकि क्षिप मारिक्ति परिचय मार्थेन् विवारे मेहराम करना पहुल ही कवारे हैं, क्वींकि एविस्सा बलसेरे मार्थिती सामान आहो है, भूग बहुती है , और मूलके सामा भेरेत्रणाः बार्कोरेर कार्यक्षेत्रं क्षूल बाहुनत है । व्यक्तिकारि क्षेत्रा बाहित भारतीय मही होते. और व मार्थ कियो भारती राजारहीत ही सीते हैं। परिश्रम क्षत्रीजालीका अलीव स्थान ही सामगत सीत प्रिके अलाहे। यह साम है कि परिवा करनेपाने कियात स्तिक भगाति सामान्य होते हैं। हिन्द समाव सार्वकिस स्वतान भारतीय कारोप बावाद करीन हार सीता है, दुसरे सामान कारीनाहे वित्त स्थाने भवित्र विभाग विता त्राचा है, वही भी भागान में होते की अध्यक्त अधिक को एक के के का का के के के का का है। विक्रिकारि क्रिया साथ सकते हैं। उसकी साथक कार्री कार्य ANGLES AND RELAX SOME RESERVE WITH THE RESE Artificial Country and and article and articles of the

फरनेसे भी शरीर नष्ट हो जाता है। जब शरीरमें शिथिलता आधे और फमजोरी मालूम हो, तब समक्त लेना चाहिए कि परिश्रम पहुत किया गया है, और तब सावधानीसे काम लें।

आजफल बहुधा देखनेमें आता है कि धनवान लोग जि^{तने} अधिक रोगी रहते हैं, उतने सदा परिश्रम करनेवाले गरीव लोग नहीं रहते । इसका यही कारण है कि धनाढ्य लोग शारीरिक परिश्रम बहुत कम करते हैं। चाहे राजा हो और चाहे रंक शारीरिक परिश्रम किये यिना किसीका भी शरीर नीरोग नहीं रद सफता । इसलिए धनवानोंको चाहिए कि हमेशा शारीरिक परिश्रम या व्यायाम (फसरत) करनेका ख्याल रखें । व्यायाम फरनेसे प्रायः समस्त शरीरमें इलन-चलन किया होती है, जिससे शरीर हुए-पुए घना रहता है। स्कूलके विद्याधियोंमें से कोई-कोई विद्यार्थी पढ़ने-लिखनेमें इतने लीन रहते हैं कि वे अपने शारीरिक परिश्रमके लिए कुछ भी समय खर्च नहीं करते, ये लोग पढ़नेके षाद जय गृहत्यायस्थामें प्रयेश करते हैं, तथ इतने पतले दुवले भीर कमजोर हो जाते हैं कि उनका जीवन भार-कप हो जाता है। इसलिय इमें चाहिय कि इम वचपन ही से शारीरिक परिश्रम या कसरत करना सीखें। जो छड़के व्यायाम करके भपने शरीरको हष्ट-पुष्ट बनाये रावते हैं, चे हो विद्या, धन, मान प्रतिष्ठा पाकर देशके भूषण होते हैं। और नहीं तो कम-से-कम रोज साम-सवेरे दोनों यक साफ मैदान या बगीचेकी दे^ष कारिके लिए मीळ-दो-मील तो जरूर टहल लिया करें।

पंतीसवाँ पाठ शह क्ष

प्रत्याको बन्ने क्रिके बन्ने हैं।

मुरं नाति पर विकास करित है। प्रस्तु तुन्हें स्राम्त्राति मताता है। उपाय देशर सुनो । यह हो तुम सामते की हो कि र्शय गाँव वक्ताके हैं एक शिक्षा, श्रीकरिया, बीमसीव्या, merken übr alarılığı ; di ola edin fordin ferdi गाँची, विभोजनका शहर गाँच है। दिन शहर exerced with the first air out of the first are wife at the tratement auf file meine bar bingen weine bije ich migm मार्थः भागतीत मार्थात् कार्या कार्या हो। याच किस्तारिक्ता कार्यक्रिय यह कोन्ड भारत है। जन कार्य कार्य कार्य कार्य है। और देखे 网络沙女女女子童 競技 艾林 有效者 医亚 安城 好地 对有性歌 制度 食力

भिन्दा कार करोड़े साम करा है।

野年八月日 朝廷的政治的政治,是任务的政治的政治的政治,是是是政治政治 (a) while the graph tel mile (a) with the (a) the B 101大日本 2:

But with the existences with specials was the 聖 老

· 我们的 · 我们是 即治安全自在政治方式中国在中国大学 有明 中野大學 一般的女子 manufacture while the state of the state of

रहते हैं। कोई पंडित होता है, कोई मूरख,—यह इसी धानावरणीय कर्मका फल है। जिसके धानावरणीय कर्म ज्यादा कम हो जाता है, उसके धान भी ज्यादा होता है। जिसके धानावरणीय कर्म कम नहीं होता, उसको धान थोड़ा होता है।

शिष्य-और दर्शनावरणीय कर्म किसको कहते हैं।

गुर-जो कर्म इस जीवके देखनेके गुणको घात करता है, यह दर्शनावरणीय कर्म है। हम छोगोंको जो नींद आती है, सो दर्शनावरणीय कर्मके उदयसे ही आती है।

शिष्य—मोदनीय कर्म वया करता है ?

गुरु—मोहनीय कर्म इस जीवको अज्ञानी करता है और कुछ-का-कुछ विश्वास करा देता है। कोध, मान, माया, लोभ, आदि कपाय जो जीवके होते हैं, वे सब मोहनीय कर्मके कारण ही होते हैं।

शिष्य-अन्तराय कर्म क्या करता है ?

गुरु अन्तराय कर्म इस जीवके दान, लाभ, भीग, उपभोग और बल इन पाँचोंके होनेमें विभ टालता है अर्थात् दान नहीं होने देता। दान करता या लेता हो, तो उसमें अन्तराय डाल देता है। किसी भी लाभमें यह बाधा पहुंचा देता है।

शिष्य-श्रीर वेदनीय कर्म क्या करता है ?

गुर-विद्नीय कमेंगे इस जीवको अनेक प्रकारके सुस और दुःच मिलते हैं। जिसमें सुस होता है, उसको सातायेदनीय कहते हैं. और जिसमें दुःच होता है, उसे असातायेदनीय कहते हैं। इस प्रकार वेदनीय कमेंके दो भेद हैं। भागा सामु कर्तान महा करा है है

विति । भागु माने कोलोपो कार्यको क्षेत्रा कार्या है सामीप मार नेता है। जिन्हीं किन यह जिन्हीं क्षांको आपू लेकी, उनके धी दिस यह एकते ही वर्ष तक यह कीय एक शारी हो। यह सकता है। दिन समय मागु-वर्ष पुत्र ही आता है, उसी समय दह भीत्र इस सार्थाणी की इसर तुम्में शरीवकी भाग्य कर हैता है।

मिण- माग्र कर्त किसकी कहते हैं ?

मुहन्त्रमा को भवर हिंदारे हिंदिन सन्हर्त Cegran, aufreiene mist har hie bie und en fie b. 理論 中 前 医叶宫叶草;

रित्या और सीच कर्मका बना कता है ?

मुक्ता । स्ट्रिक कार्य सम्बद्ध स्ट्रिक्स है हो है अस्ति स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्रिक शैनिके दिल्ल कराना का सामानूह कालान है। अनाह की सामान्त्र कार्रका प्रदेश कीता, जो भागत संगा, बागाव, कार्या क्रिया कीवा क्राविती होता होते. पारत हारारे तक रोजकर जाता होतेते राजे and gentres were done on his order of the state of the state of

from the world by the upon by

TR - 作者 如此 P. 如此 如此 P. 如此 经 在 P. A. 医骨头囊 医 在这些品本的证明 的 经数许的 医生物病病病 医 经电子的现在分词 entagen of their and entaged in market granger of 美国在海绵 医凝血性病的 養子 电线 抽名品 物质 自然的现在分词的 數本 蒙古年 聖武衛 照明日報 经产 医肾中枢红 电线 完 经的 电中间 医性神经炎

छत्तीसवाँ पाठ समय-विभाजन

६० सेकेण्डका · १ मिनट ६० मिनटका · १ घंटा २४ घंटेका · १ दिन ७ दिनका - १ इपता (सताह) ४ इफ्ते ३० दिनका - १ महीना १२ महीनेका - १ वर्ष या साल ५२ इफ्तेका · १ साल ३६५ दिनका · १ साल

एक हफ्तेमें सात वार

१ रविवार (इतवार), २ सोमवार (चन्द्रघार), ३ मङ्गलयार, ४ सुभयार, ५ घृद्दस्पतिवार (गुरुवार), ६ शुक्रवार, ७ शनिवार।

एक वर्षमें वारह महीने

हिन्दी महीनोंकि नाम अंगरेजी महीनोंके नाम १ धेत्र (चेत) १ जनवरी २ घैशाम्त्र (यैसाम्त्र) २ फेब्रुअरी (फरवरी) ३ ज्येष्ठ (जेट) ३ मार्च ४ आपाद (असाद) ध अवेल (एप्रिल) ५ श्रायण (सायन) ५ मई (मे) ६ माद्रपद (भावीं) ६ जून **৩** আগ্ৰি**त (कु**श्रार) ७ जुलाई ८ फार्निक (कानिक) ८ अगष्ट (अगस्त) म्मार्ग्शीर्थ (अगद्दन) ६ सेप्टेस्या (मितस्या) १० गौय (मूल) १० अवटीचा (अवन्याः) ११ माय (माह) ११ नवेज्या (नवस्या) १२ फल्युन (फायुन) १२ डिमेम्यर (दिमम्या)

हाइ इए

रिक्षे प्रहेशको सम्बद्ध स्था होन्छ है। स्था समी कुल क्षण आहेते. हेर्स्स हे - क स्तिक्ष, क स्वारं, क स्वता, स हेरस्त,

(1) मेच्यू विवास केवी केता है, (2) क्यों मसाह. reall, (2) were undirgeneed, (4) from order anneall, िंद्र मीत्र पूर्व सामाने और होते प्रसान-साम् कार्युन-मेन्द्री द्वारा

मेंनीसची पाठ सन्बंगीन

the spinish family thereby his part with entirely Lety were the states taken gives beine a find and and a said maletypes as the formation while asserting a next limited after Juditie of the manager with the state of the parties of the section of हुने बहारी कार्नेंग हैं। बहारिया एमीर वस बाता है सामना बारित 馬 養體 数本理论的 医外外线 经现代证 化双环 电光流电子 化氯化 医电子 化对抗 Age on the second transfer of the second market and the second of the se

THE STATE STATE OF THE STATE OF

जगमें होत हँसाय, चित्तमें चैन न पावे; खान-पान, सन्मान, राग-रँग मनहिं न भावे। कह 'गिरधर' कविराय, दुःख कछ टरत न टारे; खटकत है जिय माहिं, करें जो विना विचारे।

यह सुनकर एक कवृतर वोला—हुं: ! इस वृहेकी वार्ते कहीं तक मानें !—और जो इसी प्रकार वात-वातमें सोवा करें, तो फिर खाना किस तरह मिले, और कैसे जीयें ? यह सुनते ही सब-के-सब कवृतर नीचे उतर पड़े। तब चित्रग्रीवने सोवा कि जो होना है, सो होगा; पर अब इनका साथ छोड़ना ठीक नहीं। इस प्रकार सोच-समफकर वह भी सबके साथ नीचे उतरा। गीचे उतरते ही सब-के-सब जालमें कँस गये और जिसके फहनेसे नीचे उतरे थे, उस कबृतरको बुरा-मला कहने लगे।

चित्रवीयने कहा—इसमें इसका कुछ भी दोष नहीं। जय विषत्तिके दिन आते हैं, तब मित्र भी वैरी हो जाते हैं। इसिल्प अब घीरत घरके इस जालसे छुटनेकी कोशिश करों; क्योंकि नीतिमें कहा है—

बीनी नाहि विसार दे, आगेकी सुधि लेहु; जो गनि आवे सहजमें, ताहीमें चित देहु। नाहीमें चित देहु, बात जोई बनि आवे; दुर्जन हॅमे न कोय, चित्तमें स्वेद् न पावे। कह 'गिरधर' कविराय, यह कर मन परतीती; आगेको सुख होय, समृज्ञ बीनी सो बीनी। रत्या महत्या विषयीयाँ दिश करा - ध्या ग्या मिन्दे इस स्थाने हैं कर यह न्यार , वर्शीन नामहित्यी मामनेट को व्यक्त गुक्रमाम भिल्यम करम करि, तीर बहै नहीं ग्यार ही गकते हैं इ सैने साम गुक्री नामहित्य हैं, माग उन्हीं बालीको बहनार कार्या स्था मो, तीर नह बहला महत्यू हो आला है कि बहे नहें स्थापनामीने की मही हुए श्यात ।

कुमान स्ट्रानी ही राजाने नाम जानूनर राजानात प्राप्त राजेन प्रक् कर्म क्षीर रंगर समस् प्रमु सामर्थे सामानिक सामा जाना रिपास र ... स.स. क्षेत्रकार शिकारों क्षा रह सामा र ... क्षार सूत्र माने प्रोप्ते सामार क्षेत् बाह, कारतीर समामा सीचन भागाना नाम स्ट्रीन शिकी सामा रहा राजा र

स्थान कृत सम्भावित नाह विकार निर्माण कर करिया है। व्यक्ति करिया कि व्यक्ति करिया करिया करिया करिया करिया करिया है। व्यक्ति क्षिण करिया कर

उनचालीसवाँ पाठ चार गति

हम और तुम, संसारके सभी जीव, अपने ही द्वारा उपार्जित कमोंके फलसे संसारकी चारों गतियोंमें जन्म-मरण करते हुए नाना प्रकारके दुःख भोगते रहते हैं। इसलिए उन गतियोंका स्वरूप सबको अवश्य जानना चाहिए। गतियाँ चार होती हैं -(१) मनुष्य-गति, (२) तिर्यंच-गति, (३) देव-गति और (४) नरक-गति।

- (१) मनुष्य-गितः— 'तत्त्वार्थं सूत्र' में लिखा है, "अल्पारम्भ पिरव्रहत्वं मानुषम्य" अर्थात थोड़ा आरम्भ और थोड़ा परिव्रह रखनेसे मनुष्य-गित होती है। चारों गितयोंमें यही सर्वश्रेष्ठ यानी सबसे अच्छी गित है, क्योंकि इसी गितसे आत्माकी मुक्ति (मोक्ष) मिलती है। इसी गितमें तीर्थंकर उत्पत्न होकर मोक्ष प्राप्त करने हैं। इसिलए हम सबको चाहिए कि हमेशा थोड़ा आरम्भ (सांसारिक कामोंका पाप) और थोड़ा परिव्रह (चीतोंमें ममता) रखें, जिससे हम किर मनुष्य हो सकें।
- (२) तिर्यंच-गतिः इट्, छल-कपर मायाचारी आदि करनेरी तिर्यंच-गतिमें जाना पड़ता है ; अर्थान् हाथी, घोड़ा, गाय, मेंस, गया सांव विच्छा विडिया, भाँगा, चींटी, केंसुआ, कीड़े-मकोई वर्षेत्र का शरीर धारण करना पड़ता है। तिर्यंच-गतिमें यड़ा कुछ है! वृद्य-प्याय गरमी जाड़ा, वध, यन्धन, मार शाना, गाड़ी संच्यता आदि अतेक दृश्य भोगते पड़ते हैं, इस्तिएए हमें छल-मुद्द न करना चाडिए।

और इस पृथ्वीके नीचे कमशः इस प्रकार मौजूद हैं—१ रहाप्रभा (धम्मा), २ शर्कराप्रभा (धंशा), ३ वालुकाप्रभा (मेघा), ४ पंकप्रभा (अंजना), ५ धूमप्रभा (अरिष्टा), ६ तमःप्रभा (मध्यी) और ७ महातमःप्रभा (मध्यी)।

इन नरकोंमें—पहलेसे दूसरेमें, दूसरेकी अपेक्षा तीसरे आदिमें अधिक-अधिक दुःख और आयु अधिक-अधिक होती है।

इन चारों गतियोंमें—मनुष्य-गतिके सिवा अन्य गतियोंमें चरित्र धारण नहीं बनता। इसिलए मनुष्य-भवको पाकर, धर्म-शास्त्र आदि पढ़कर धर्म सेवन करके, जितना भी वन सके, अपने आत्माकी भलाई करनी चाहिए।

चालीसवाँ पाठ अभिषेक-पाठ या 'मंगल'

पणितिति पंच परमगुरु, गुरु जिन-सासनो ; सकल सिद्धि-दातार सु, विधन विनासनो । सारद अरु गुरु गौतम, सुमति प्रकासनो ; मंगलकर चड-संबहिं, पाप - पणासनो ।?

पापिंह पणासन गुणिंह गरुवा, दोष अष्टादश रहिउ; धरि ध्यान करम विनासि, केवलञान अविचल जिन लहिउ। प्रभु पंच-कल्याणक विराजित, सकल सुर-नर ध्यावहीं; बेलोकनाथ सु-देव जिनवर, जगत संगल गावहीं।?

भासियो फल तिहिं चिन्ति दम्पति, परम आनंदित भये; छह मास परि नव मास पुनि तहें, रैन-दिन सुखसों गये। गर्भावतार महन्त महिमा, सुनत सब सुख पावहीं; भणि 'रूपचन्द' मुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं।

(२) जन्म-कल्याणक

मति-श्रुत-अवधि विराजित, जिन जब जनिमयो ; तिहुं लोक भयो छोभित, सुरगण भरिमयो । कल्पवासि घर घंट, अनाहद बिजयो ; जोतिप घर हरि-नाद, सहज गल गिजयो ।

गिलियो सहजहिं संख 'भावन' 'भूवन' सबद सहावने ; विन्तर-निलय पट्ट पटह बलहिं, कहत महिमा क्यों बने । कम्पित सुरासन, अवधि-बल, जिन-जनम निहर्च जानियो ; धनराज तब गजराज मायामयी निरमय आनियो ।१०

जोजन लाख गयन्द, बदन सौ निर्मये; बदन-बदन बसु दन्त, - दन्त सर संठये। सर-सर सौ - पणबीस, कमलिनी छाजहीं; कमलिनि-कमलिनि कमल, पचीस विराजहीं।११

कमालान-कमालान कमल, पचीस विराजहाँ ।११ राजहीं कमलिनि कमलप्टोनर, सी मनोहर दल बने । दल-दलिं अपलग् नटिं नवस्स, हाव-भाव सुहावने । मिल कनक-किंकणि वर विचित्र, सु असर मेंट्स सोहरे । पन घंट चमर भूजा पनाका, देखि जिस्बन मोहरे ।११ विधि करि हरि पहि आहा, पुर परिवर्षित ; पूर्वद सरकार के कर, किस्ट-स्टब्स्टिस । पुर लाप किसे-सन्तिति, क्यक्तिश हरि : सामान्य वितु स्थि सी, किसे अन्ति स्टीक्ट्रिस

अस्पं सभी जिस्ताप विस्ताप स्थम कृष्य स प्रेटरे । गुर प्रमा कर्मकृत्य क्रिमें, गुरूष सेव्यक पूर्विते । पुनि कर्मि प्राप्त पुत्रप्तम हुए, कर्मन धर्में कह कीवल । देखन हुए मुख्यक्षि क्रिस्त हुए सहस्र बेट्यह ।१४

ा । स्वतास्थार वर्षेत्रः, जन्म दूव व्यवी : रेख मक स्वयस्य, स्वयः स्वयस्यी : सुकारकारित स्वयुक्तिकि, स्वयं स्वयंति स्वयं : स्वयंत्रस्य स्वयंत्रकिकि, स्वयं स्वयंति स्वयं () प्र

A CONTRACT OF THE STREET OF THE STREET STREET, STREET STREET, STREET,

mineral money as we may a sense of a

वाजने वाजिहं सचीं सब मिलि, धवल-मंगल गाविहीं पुनि करिहं नृत्य सुरांगना सब, देव कीतुक धाविहीं भिर छीर-सागर जल जु हाथिहिं,-हाथ सुर गिरि ल्यावहीं सौधर्म अरु ईसान इन्द्र सु, कलस ले प्रभु न्हाविहीं।१

> वदन उदर-अवगाह, कलस-गत जानिये; एक चार वसु जोजन, मान प्रमानिये। सहस अठोतर कलसा, प्रभुके सिर ढरे; पुनि सिंगार प्रमुख आचार सर्वे करे।१६

करि प्रगट प्रभु महिमा-महोच्छव, आनि पुनि मातहि द्ये। धनपतिहि सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहि गये। जनमाभिषेक महन्त महिमा, सुनत सब सुख पावहीं। भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर, जगत-मंगल गावहीं।

मंगल-गीत

में मित-हीन भगित-वस, भावन भाइया ; 'मंगल-गीत प्रवन्ध' गु, जिन-गुण गाइया । जो नर गुनहिं, बग्वानहिं मुरु धरि गावहीं ; मनवांछित फल सो नर, निहनें पावहीं ।

पावहीं आटों सिडि नव निधि, मन प्रतीत जो लावहीं । भ्रम-भाव छटें सकल मनके, 'निज' स्वस्य लगावहीं ! पृति हर्सटें पालक, टर्सटें वियन, सु होहिं मंगल नित्नगें। भाषा 'स्यावन्द' जिलोकपति, जिनदेव चड संबर्धि गये।

इकतालीमचाँ पाट मेरदे वाच एव

तिया है हरिया की साम है कि के कि का का का का का की कर है। भेषस्य संभापत व्यानुस्थित व्यानुस्थित व्यानुस्थित है । ज्ञाना र रिवार कार्यार दुर्विको बहुन समामाना बार्ला, यह के ग्रन्थ मही स्टूर्व है। अब विभेक्त रेजिन कार्य अवस्त । याच करियो कार्यको समाज्य परि न्द्रम् इत्राम्पर प्रथमित् प्रथमित व्यापनार्थेत स्थानिकृतः स्वाचेत् । व्यान्तरेतः ४० एते सामार्थेत इसह रेग्नुकर्त्यक्ति स्ट्रेन सुकारी काल फ़्रारानेत्र ह सानिकानि पत्रव वर्गोनेत्रपति वापना wit more entres with or on feether at unit or one train une chair made eigne eine fames amobie eter हैं, हुंब बहुत्तरि क्षत्र हैं। एक बादिक के प्रति है। इसी देखी करि कुछ ब्रुगित पुरुषे प्रकृति प्रकृति वार्षा प्रकृति । वार्षा वार्षा वार्षा वार्षा वार्षा वार्षा वार्षा वार्षा Mindle Mar Rett . Wie wie gur alleb und leinen erfelt क्षांत्र भागा के में संबंध कार्या है के स्वार्थ की संबंध की स्वार्थ है कि स्वार्थ है की स्वार्थ अस्तिको कोर्निका कर्मार स्थिते की सुधा बहुत हो सुमाने वर सर्वाती र 衛星 野 都接 開本在北京 在前 电流 安日 电影出源 不 不知此 是如此此 題 歌性 有兴味中 经强产的债 特蒙 粉料 老年 不知 新中城市 安州市 क्षिण प्रमाणके केलके प्रकार स्थापने करने जोते र

Martine and the parties and the second for the second seco

्वयालीसवाँ पाठ कौन, क्या और क्यों ?

शिष्य—गुरुजी, वास्तवमें पंडित कीन है ? गुरु—जो विवेकी हो, अर्थात् स्वयं विचार-पूर्ण मार्गसे चले और दूसरोंको भी सुमार्गमें चलावे।

शिप्य—मूर्ख कौन है ?

गुर--जो खुद तो जाने नहीं और झानीकी माने नहीं। शिष्य--शुर-बीर कीन है ?

गुरु—जिसने कोध, मान, माया, लोभ और इन्द्रियोंकी जीत लिया हो।

शिष्य-कायर कौन है ?

गुरु-जो मन और इन्द्रियोंको वश नहीं कर सकता।

शिष्य—किस मनुष्यका जन्म सफल है ?

गुरु—जो संसारमें धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुपार्थोंका शक्ति-भर पालन करना हुआ सचा सुख और सायी शां^{ति} पानेके लिए मोक्ष-पुरुपार्थकी साधना करता है।

शिष्य - जगतमें धन्य कौन है ?

गुरु—जो अनन्त शक्तिशाली अपनी आत्माको पहचातकः, संगारको अन्य तमाम चोजोंसे मोह-ममता न रखता हुआ, अहिमा-मत्य आदिका पालन करता है।

शिष्य--चिकारने-योग्य कीन है ?

गुरु -- जो धर्म-पालनको प्रतिज्ञा करके भंग कर दे। शिष्य -- मित्र कीन है ?

शिष्य-टोंटा (विना हाथका) कौन है ?

गुर-जिसने औषध, शास्त्र, अभय और आहार इन चार दानोंमें से एक भी दान न किया हो।

शिष्य-इस दुःखपूर्ण संसारमें शरण कीन है ?

गुरु—सन्चे देव, सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरु।

शिष्य—जर्ह्य क्या करना चाहिए ?

गुरु—धर्म अर्थात् कर्मोंसे मुक्त या स्वाधीन होनेका प्रयतः।

शिष्य—नित्य क्या विचारना चाहिए ?

गुर-संसारकी क्षण-भंगुरता और आठ कर्मांसे जकड़ी हुई अपनी पराधीन आत्माका स्वरूप।

शिष्य-सबसे उत्तम धन कीन-सा है ?

गुम-विद्या, अर्थात् सचा द्यान ।

शिष्य - उपादेय (सीखने या प्रहण करने-छायक) क्या है ?

गुरु-आतमा और जड़ वस्तुओंमें ज्यों-का-त्यों सत्य और

पूर्ण विश्वास, सचा जान आर सचा आचरण।

शिष्य—हैय (छोड़ने लायक) स्या है ?

गुरु - मिथ्या विश्वास, असत्य बान और असदु आचरण।

शिष्य - चिप वया है ?

गुर - भोग-विकास और वुरी संगत।

शिष्य - इस संसारमें सार क्या है ?

गृत - मगुष्य जन्म पाकर तस्त्रदर्शी विद्वान, होकर निजन्पर (अल्या और जड़ पदार्थ) को रामककर बाणी मात्रके हित्सी उपत या तत्पा रहना।

तेतालीसवाँ पाठ

जीवकी नौ पहचान और दस प्राण

चारहवें पाटमें जीव किसे कहते हैं इत्यादि मामूली वताया जा चुका है। अब जीवके विशेष स्वरूप, खास-खास पहचान और उसके दस प्राणोंका वर्णन किया जाता है। 'दृथ्य-संग्रह' की एक गाथा है—

''जीवो उवओगमओ, अम्रुत्ति, कत्ता, सदेहपरिमाणो ; भोत्ता, संसारत्थो सिद्धो सो विस्ससोड्दगई ।२।"

अर्थात्—जीवे सो जीव है, उपयोगमय (बानमय) है, अपूर्ति है, स्वयं कमोंका कर्ता है, अपूर्नी देहके वरायर (छोटा या बड़ा) रहता है और अपूर्ने उपार्जित कमोंको भोगता है, संसारी है, सिद्ध है और स्वभावसे ही उर्ध्व गमन करनेवाला है। अर्थात् ये नो प्रकार या नो पहचानें जिसमें पार्र जाय, वही जीव है।

जीवकी ना पहचान :---(१) वास्तवमें जीव -- आदि,मध्य ऑर अन्त-रहित - शुद्ध चीनन्य या जानमय है, यानी जान चीतन्यको ही 'जीव' कहते हैं।

(२) औवके ज्ञान और दर्शन—ये हो उपयोग (सेनताकी परिणति) हैं, इसलिए वद 'उपयोगमय' है।

(३) संयपि जीय, स्पी-कमोंने पानी और दूर्धकी तगर । गरुमेंक हो रहा है, परन्तु यान्त्रमें रूप-इहित 'अमुनिक' है।

(४) वान्तवमें (निध्ययतयमें) यद्यपि जीव किया-पहित स्था

तीन-यल:—(१) काय-यल, (२) वचन-यल, (३) मनोयल।

- (६) काय-वल:—शरीर या देहको शक्ति।
- (৩) वचन-वल:—मनके भावको व्यक्त करनेकी शिक्त। वातचीत करनेकी ताकत।
- (८) मनोवल:—जिससे जीव शिक्षा ब्रहण करता हो, तर्क-वितर्क या संकेत आदि समभता हो और कार्य-कारण आदिका विचार करता हो, उसे 'मन' कहते हैं। इसके दो भेद हैं— (१) द्रव्य-मन और (२) भाव-मन। रक्त-मांसादिका वना हुआ हदय 'द्रव्य-मन' है और ज्ञानावरण-वीर्यान्तराय (कर्म) के स्रयोपशमसे मन द्वारा जाननेकी शक्ति 'भाव-मन' है।
- (६) आयु:---आयु-कर्मके अनुसार जीवोंका मौजुदा देवमें रुका रहना। अर्थात् उम्र।
 - (१०) श्वासोच्छ्वास:-—साँस और उसास। इसकी 'पान-अपान' भी कहते हैं।

विशेष:---इनमें से एकेन्द्रिय जीवके शुक्के ध प्राण होते हैं—(१) स्पर्शन-इन्द्रिय, (२) काय-वल, (३) आयु और (४) श्वामोच्छ्वाम। दो-इन्द्रिय जीवके रसना-इन्द्रिय और वयन-यल मिलकर ६ प्राण होते हैं। इसी तरह ते-इन्द्रिय जीवके प्राण-इन्द्रिय बढ़कर ७ प्राण होते हैं, चौ-इन्द्रिय जीवके व्यान-इन्द्रिय बढ़कर ७ प्राण होते हैं, चौ-इन्द्रिय जीवके व्यान-इन्द्रिय बढ़कर ८ प्राण होते हैं, पैचेन्द्रिय जीवके श्रीवेन्द्रिय वहकर १ श्रीर संती पैचेन्द्रिय जीवके मन बढ़कर १० प्राण होते हैं।

- (१) सेनी जीव—वे हैं, जिनके मन हो। पंचेन्द्रिय जीव ही सेनी या संज्ञी हो सकते हैं। जैसे—आदमी, हाथी, घोड़ा, गाय आदि इस पृथ्वीके जीव तथा स्वर्गके देव और नरकके नारकी।
- (२) असीनी जीव—वे हैं, जिनके मन न हो। एकेन्द्रियसे लेकर चौ-इन्द्रिय तक सब जीव असीनी होते हैं। सिर्फ पानीमें रहनेवाले फोई-फोई साँप और बाज-बाज तोता भी असीनी या असंही होता है।

पंचेन्द्रियसे नीचेके जीव, सब असैनी ही होते हैं; क्योंकि 'मन' पंचेन्द्रिय जीवके सिवा और किसीके हो नहीं सकता। स्थावर जीव:----'स्थावर जीव' एकेन्द्रिय जीवोंको कहते हैं।

ये पाँच प्रकारके होते हैं—(१) पृथ्वी - कायिक,

- (२) जल-कायिक, (३) अग्नि-कायिक, (४) वायु-कायिक और (५) वनस्पति-कायिक।
- (१) पृथ्वी-कायिक :—पृथ्वी ही है काय जिसकी ; यानी जिस जीवकी पृथ्वी (धरती) ही देह है, यह 'पृथ्वी-कायिक जीव' है। जैसे—धरतीकी मिट्टी, पहाड़, खानमें सोना-चाँदी आदि धातुष ।
 - (२) जल-कायिक :—जल ही है काया या देह जिसकी, ^{शह} 'जल-कायिक जीव' हैं। जैसे—पानी, ओस, ओला आदि।
- (३) अज्ञ-कायिक : आग ही है देह जिसकी, यह 'अप्रि-फायिक जीव' हैं। जैसे – आग या अंगार।
- (४) यायु-कार्यक: यायु या ह्या ही है देह जिसकी, यह जायु कार्यिक जीव' है। जैसे ह्या।

जिसके उद्यसे आत्माको सम्यक्त्य न हो और स्वस्पावरण चारिज न हो सके, उसे 'अनन्तानुबन्धी कपाय' कहते हैं। इसी तरह जो अणुवत न होने दे, सो 'अप्रत्याख्यानावरण कपाय' है। जो महावत न होने दे, सो 'प्रत्याख्यानावरण कपाय' है; और जिससे यथाख्यात-चारिज (कपायोंके अभावसे पैदा हुई आत्मा की शुद्धि-विशेष) न हो सके, उसे 'संज्वलन कपाय' कहते हैं।

मतलय यह कि आत्माको सबसे ज्यादा हानि पहुंचानेवाली और पत्थरको लकीरको तरह मुश्किलसे मिटनेवाली कपायको 'अनन्तानुबन्धी कपाय' कहते हैं। उससे कम ताकत रखनेवाली, कम देर तक रहनेवाली और आत्माको कम नुकसान करनेवाली कपायको 'अन्नत्याख्यानावरण कपाय' कहते हैं। इसी तरह—उससे कम शक्तिशाली कपायको 'प्रत्याख्यानावरण कपाय' कहते हैं। कपाय' कहते हैं, और नाम-मात्र कपाय रहनेको 'संज्यलन कपाय' कहते हैं।

[इनका समक्रना भी जरा कठिन है, इसिलए इसे तीसरे भागमें समक्रना]

प्रमाद :- क्यायोंके तीच्र उदयसे, यानी काफी तीसी कोच-मान-माया-लोभ मीजूद रहनेसे जीवको जो अहिंसा, सत्य, अचीर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिषद आदि बत या चारित्र पालत करनेका उत्साद नहीं दोता, जो इनमें बाधा या अड्चन डावता है, सो 'प्रमाद' है।

धर्म शास्त्र पहनेमें आलख करना भी प्रमाद है, इमे^{लिए} प्रको पुस्तक पहनेमें कभी आलख न करना चाहिए।

व विताओं ने वि हुए फ्टिन एवं पारिमापिक शहरीके जर्भ और अभिश्राप

्रे हेरी स्थापने स्थापन जिल्लास्था । स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स् स्तिक्षी के स्थाप के स्थापित स्थाप है। जिल्ला स्थाप से अपने स्थाप से करोष भीवारी आज म ही.

· 我们的经验了一个一个一个一个 、 既然, 好代 图片) 、野地大学、李明、 明明等。 对对是。

· · N. S. Wall Margarian ... Aska koji.

一大大学のできる 五 歌歌 有一 聖禮 使光度 **通過機能,發於簡單所有** Shirt the second and the second and the second and the

क्ष्मिक्र तम् विकास । व्यक्तिक स्वारीकार्ते । व्यक्तिक । अस्मान । 事務實際各有各種實際等級 有時間以及一時時期一時時間是一一時日後也

Kancanda 在 別題 高山山

स्तितिहरू प्राप्ति स्रोतं स्तित्व र प्रतिकृति । व्याप्तित्व प्रतिकृति काराया है व्याप्त 大學學學 医克克二 医神经性神经病,是中国的神经学学 of the batter that they bear the . Belich ... migene min gegentriet i stilling . mitte ! etterliet minte,

कारी के सा भार कर रिवे र कर्रोदेख -- स्ट्रांसर्थिक्ट्रान्थे प्रकार्यकाल ह 我你一个你是 我你我一个我 "我你,我说,我想,我想到

wifer with element Company - March Company & S

一次大学中 医安全性 無學 黃龍

form # 4° s 好些情報 经代价金金 7 数10% 数14% 3

आस्त्रव--आत्मामें कर्मोंके आनेका द्वार। मन, वचन और काय इन तीन योगोंके हलन-चलन से कर्मोंका आस्त्रव होता है। इए—इच्छित, जिसकी चाह हो। 'उछंग'—गोद् । उतंग—ऊँचा । उतारन-पार करनेको। उपसमी-शान्त हो जायँ। उर-हृदय, मन। पकांत-एकांतवाद-मिथ्यात्व, मिथ्या धर्म : जिस सिद्धान्तमें स्याद्वाद, अपेक्षावाद या नय-प्रमाणोंसे जीव-अजीव पदार्थी का विचार न किया गया हो। एव-हीं, निश्चित रूपसे। फन-अन्त, अनाजका दाना। कमलऽहोतर सी-कमल आह ज्यादां सी। १०८ कमछ। 'कमलिनी'—कमलोंकी माला। करि-हाथी। कळित—धारण किये हुए, समेत। कहोल --लहर । फहोल-माला-सिळसिलेबार यहत - भी लहरें। बहोल-मालाऽकुलित सागर -तहरोंने चंचर मनद्र।

। काललविश्र--- आत्माके कल्याणकारी किसी कार्यके होनेके समयकी प्राप्ति । कुंजर-हाथी। केशर-सिंहके गरदनके वाल। गये--सहस उलँघि गगन निन्यानवे गगन उहँ घि गये— मेर-पर्वत एक लाल योजन ऊँचा है, जिसमें १ हजार योजन जमीनके नीचे है-वाकी ६६ हजार ऊँचे चढ़े। गयन्द—हाथी। गल-वड़ा वाजा। गिण्या-माना, समभा। भारी गुणहिं गरुआ-गुणोंमै या महान। 'गुन'—जापा, प्रसृति-स्थान । गुरु—बड़े भारी, महान । चड-संघ —गुनि,अजिका,श्रायक, श्राविका इन चारोंका समृह। चड-संबहि गये (चहु गंबि जये) -चारों संब ही या जय-जयकार चिन्तामणि - बद रह मनकारी गोत मि चौर्छ चार्गताः

जगामी।

्रियं पति । सामा गामी । प्रमुचि, देशकी गृति । भाग-के बीरे हमा। े श्री-लिन् व्याप्त स्थाना गुर्वाने । यानी व्यान्याको बीद बार्य ्रावरिता मुखा । आसन्त्री । क्यतिवारि इस सामा शरीहरू **小松海珠** 1 ्रिक्षणके अस्ताका भाषा, भाषा **भाषा सामक्रम**ा from the state of the f क्षण्य - विशा १ जनवर्ष -- भारत । - विशित्त विश्वनात -- वासामीयकार. ments for forth and केर्ये - मानियेति, मामान्येति इ British , British and Andrews & the street we expert the हार्युर्ग, क्रमबंहाम, व्यंत्रिकाचार, 🔻 📑 सामान्य, क्रमेका ह क्रिस्मानारी, विस्तान की अवसीत् हिन्दुसार स्टन्सी स्टिस ह 医内外性 在一场中 我们是不出去,你不是人 好事的 著手 在外边时,我也许 地名网络 本山北京 5 大松田一 去於此時,如此城 東 Esta Silve, fifth arts a THEY SHOWEN THE BEST WAS A Annitation to be given by to weight distributed to 如今 多香港市

्र परिवर्षिये आयो निवार ---र्याकाची विका का बार्याकी . मार्किटींग क्रीय -- मार्किटींबन जात । ं एक ही स्वाध्य क्रिया, विकास - अनुहै अन्यको सूच अही । ्रिक्ष्यात्रातः । भूषः, अस्तित्रात्रात् । भौत बंधीको प्राप्तः है, किलाह, त्युगानः व्याहको पहाल, स्रीह man Shirts & Bridge Bridger Character was made former to the state of the said of

605 थास्रव--आत्मामें कर्मीके आनेका द्वार। मन, वचन और काय इन तीन योगोंके हलन-चलन से कर्मोंका आस्रव होता है। इए—इच्छित, जिसकी चाह हो । 'उछंग'—गोद । उतंग—ऊँचा। उतारन—पार करनेको । उपसमे—शान्त हो जायँ । उर—हृद्य, मन । एकांत-एकांतवाद-मिश्यात्व, मिथ्या धर्म ; जिस सिद्धान्तमें स्याद्वाद, क्षपेक्षाचाद या नय-प्रमाणोंसे जीव-अजीव पदार्थी का विचार न किया गया हो। एय—ही, निध्यित रूपसे । फन-अन्न, अनाजका दाना । फमलऽहोतर सी--कमल आह ज्यादां सी। १०८ कमल। 'कमिलिनी'—कमलोंकी माला। करि—हाथी। कलित-धारण किये हुए, समेत। महोल-न्तरः। महोल-माला-बहुत - सी सिलमिलेबार कलोल-मालाऽकृतित मागर -त्यति चंग्रा मन्त्र।

काललिय—आत्माके গ্ৰাম कल्याणकारी किसी कार्यके होनेके समयकी प्राप्ति। कुंजर—हाथी। केशर—सिंहके गरहनके बाल। गये—सहस उलँघि निन्यानवे गगन उहँ वि गये — गगन मेर-पर्वत एक लाल योजन कँचा है, जिसमें १ हजार योजन जमीनके नीचे हैं वाकी ६६ हजार ऊँचे चढ़े। गयन्द्—हाथी। गल—यङ्ग याजा । गिण्या—माना, समभा। भारी गुणहि गम्आ—गुणोंमें या महान। 'गुन'—जापा, प्रमृति स्थान । गुरु-यहे भारी, महान । चड-संघ —मुनि,अजिका,श्रायक श्राविका इन चारोंका समृह चड-संबंधि गये (चहु मंत्री जये) -चारों मंघ गुण गा हिया जय-जगकार फारने हैं चिन्नामणि चर रहा हिता मनमार्थ नीत तिले। चीत्रं नागं तरकी गुर्व जगाउँमें।

किस समित अनुपत् नामान् । क्षीतर पुरु स्थान स्थानित वार्ता स्थानित केंद्र सार्क Text Ments White with a minimal . · Salaka & March Marchan Miles CHANGE - CHANGE & MINIST - MANUAL & FARTHER STREAMS - WHITE CHANGE The State of the S · 物物 海水 - 香油香 物大家 रोंद्र अंतरिक्त वावस्ती र **新性的 、物种植,树色鲜色** ALE STREET WAS ARREST 東京中央 (大学を) 大学 大学 (大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学 (大学) 「大学 (大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学 (大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「大学) 「大学) 「大学 (大学) 「大学) 「 重大社会教育 好好的人 经公司经济的证 经实现的 经实现的 養 生 医野鸡一种 建甲烷 经成本 Marine Annie FOR STATE AND PROPERTY A The state of the s Marie A

डपुर्नित, हेराओं गुरिशा पत्न-वर्गानां आपी विवार क्षानेपाने इस माज शरीर क्राकार्थः सिमा या महामेकी सन्तर काम स्वापकार । मुर्वितिक सीच - महिल्लीका जाता है Chiefe territati militati finanti the state of a said ! freeze . The street state. 超州武河 \$ with the property of the same 安中海 经产品的 ALM ROALS AN AM AN English a · 一种一种是有 South State of the men white them of 大大學 电对子管 原外 地 地名 新州 阿阿里爾 医多分形 我不是 生人 医皮肤 The State of the second

दर्शन, अनंत सुख और अनंत निरमय-निरमाकर, निर्माण वींर्यसे सुशोभित। दुख-गद--दुःख-रूपी रोग। दुख-निकन्द—दुःख हरनेवाले । दुगुनायाम—दूने नापकी। देई-देशी। ह्रस्द्र--दुविधा । वर्षेड्रा । धुनि--दिव्य-ध्वनि, जिनवाणी। नद्रहिं-नृत्य करती हैं। नयरि-- नगरी। नव - फेबल - लव्धि — अरहन्त भगवानके अनन्त जान-दर्शन भावोंकी प्राप्ति। निज--श्रातमा । श्रातम-संवंश्री । परवान-प्रमाणसे निज-अनुभृति-हेत- आत्मा की थनुभृतिमें कारण, आत्माकी 📒 पहचान करानेमें सहायक । | परिखा - खाई। निज-पर-विवेक -- शात्मा - शीर ्पातक-पीर-- पापजन्य दुःस । जङ् पदार्थोकी वास्तविकता । पावन—पवित्र, शुद्ध । ऑर भिन्नताका सद्या शान । पावनी- शुम, शुद्ध । (स्त्री॰) निजाधीन-शान्मामें लीन । निज्ञानन्द्—आदिमक सुख । े वियुष —अमृत, द्या । निमिन-कारण - किमी कामके पीठ, पीठिका - पीड़ी, बैठनेकी होनेमें हेतु-रूप सडायक। निर्देश--शात्मासे कमीका थोड़े पूर्तिये (पुत्रना, पूरा होना 🎾 र्धशोमें अलग होना। पूरन किये।

करके, बनाकर। पंच-कल्याणक—तीर्थंकर भग-वानके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्षके समय होनेवाले महोत्सव । पगार-कोटकी दीवार। पच्छिम—पूर्वसे उलटा पच्छिम यानी पहलेसे उलटा पीछे। रयन--रात। पणविवि--प्रणाम करता हूँ। पयोनिधि-श्रीरसागर। शादि नो तग्हके क्षायिक पर-आत्माके सिवा या उससे अलग संसारकी और सब चीजें। अवधि-ज्ञान-परवान-अवधि-बानसे जानकर। पात्रम-काल-यासानके दिन। आधार, येदी ।

की। धूरिकी का एके ब्रह्म 🦠 हैं। व्यवसा केला ब्रह्म धुनिकी 特定 横线电影 Rights mater andright. 竹塘 時門時 馬姆里主 新进,2007年1月 新发生的 1000年1 Se Lucial 6

世界 新文、新学性生 据150年,其14年1日 A foliable for new more ngu dega madad an dag. अन्ति क्षत्रमान् बैन्द्रायन्ति ।

· 1997年 · 新山山 · 新山山

好好一颗特数维人 well at the west of 数字 医多种性肾炎 1777年 · 经经济企业的 美多点 基础性 数, 欧洲人 医原性 医原性 斯里特人 有大學性 新婚子 gige - at his on a gifting the Driver in the state of the 好了如本中、惠安司大致、弘忠、安安美安等日 · 京州人民共和 医多生素性性性疗法 李明明的 一种物的 经货物的 的复数 松祖子的在在在京都 解說 美傷。 一個以 野林衛衛等

wine states appear age. · 如果 自由 多的 多点 图象。 वर्गकारी शिक अन्यता वाही मृत्र कुलाएके सर्वाप है। सिंगुलाक सीम्प्रेस कारीने वैक् 實辦 實際者 क्ष्मानक । विनित्न अवस्थानकी स् स्थापनकान जीत स्थापक मानिक्स कृत्र अनुस्त्र कर्यानुस्त्र वस्त्रात्राहर ह fectale seeming 美国·胡桃南州 美国新安 新城市。 है करा हुन हुन हुन हुन हुन हुन

- Billiake, Butterjage Aland Schiges · 東京 京田 おれ おれ かん は いま まんか 等级 中世史古 · 相信音樂 被不同時的 · 我們你有 不同一种性 A finding to the state of the "我是一个年期的 (明朝、新撰文新學》 唐明 原鄉

विधि-फल—कर्मोंका फल। कर्म-जनित विभाव-आत्माके .शुभ-अशुभ भाव। विषय-कपाय-पाँचोंके इन्द्रियों के विषय तथा कोध-मान-माया और लोभ कपाय। ीतराग-विज्ञान—राग-द्वे परहित शुद्ध आत्म-शान। तिरागी—जिनके राग - द्वेप यीत चुके हों। 'राग' शब्दमें 'हेप' भी शामिल रहता है। शारद—सरस्त्रती, जिनवाणी । शिव—मुक्ति, मोक्ष । शिवनाथ—मोक्षके स्वामी । श्रद्धान—श्रद्धा, सञ्चा विश्वास। श्रावक—आंशिक रूपसे या कुछ अंशोमें अहिंसा, सत्य,अचीर्य, ब्रह्मचमें और अपरिब्रह बत पालनेवाला सदुगृहम्य। संटये-वनाये। संबर-शाहमामें कमीका आना रक जाना। मन्यर्दर्शन –जीव और अजीव आदि संसारकी सभी चीजों के यथार्थ स्वरूपमा श्रद्धा या सचा और अटल विश्वास ।

सरवम्-सर्वस्य । सरहि—सिद्ध या सफल होते हैं। 'सहज-गल'—'सहस गल' होगा। सारिखी-समान। सिंह-पीठ—सिंहासन। सीरी-ठंडी। सुचतुष्टय-मय—अनन्त चतुष्ट्य-सहित। अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनंत वीर्य या वल, इन्हें अनन्त-चतुष्टय कहते हैं। सुधि—होश, शान। ष्ठर—स्वर्ग । सुर-वास--स्वर्ग का रहना या देवता होना । सुलभकर—आसानीसे मि**ल**ने-वाछे। सेती—से, कारणसे । सेस सक-वाकीके इन्द्र। सी-पण-वीस — सी-पाँच-वीस, एक सी प्रचीस । स्वपद-सार-सार-रूप यानी अपनी आत्माका पद। म्वाति-विन्दु-- म्वाति - नक्षत्रमे यरसनेवाळी यूंद। हरन-सूर -दूर करनेको स्रात्। हरिनाद--मिहनाद।



| | • | | | |
|----|---|--|--|--|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| •_ | | | | |
| | | | | |